सर्ब्बोपकारक

नं· ३२ | ५ अक्तूबर सन् १८५८ ईसवी मंगलवार | अं· २

हिन्दुस्तानकीवर्षवारतारीख के इतिहासका शेषसितम्बर सन् १८५७ ई०

१ तारीख को जनरैल औटरम साहिब
६० और ५१ वीं पदाती गोरों की पल्टनऔ
र एक कम्पिनी फिस्लियर इनके सिरदार
होकर इलाहाबाद में पहुंचे– ३ को लार्डए
गलिन कलकत्ते से चीन को रवानें हुए–
५ को किले का तोड़नें वाला तोपखाना देह
ली के सन्मुख पहुंचा और एक बल्लोचों
की वीं पल्टन का भाग सिरकारी लश्कर के बी
च देहली में पहुंच गया– ६ को जम्बू के राजा
की सेना सिराबली में पहुंची देहली पर हम
ला करनें के निमित्त बड़ी तैयारियाँ हुईं– ७
वीं को मरी के पहाड़ पर कुछ उपद्रव हुआ
परन्तु शान्त कर दिया गया– ८ वीं को उपद्र
वियों के एक बड़े समूह को सितारे में फांसी
दी ग्रेंसाहिब की रैफिल पल्टन और कीन्
वाले राजा की सेना देहली में पहुंची और
अन्य बहुत सी सेना के पहुंचनें से सिरका
री लश्कर की नीव जम गई इसी तारीख को
कुदसिया बाग़ जो कि केवल ३२० गज दे
हली से हैं ि यकर लिया और उसस्था
न पर मोरचे नियत किये– ९ वीं को और
मोरचे देहली पर लगाए गए और शत्रुओं
के बड़े ग्राफ मारे– १० तारीख को फीरोज़
पुर के उपद्रवी देहली में पहुंचे परन्तु उन
को सिपाहियों नें देहली के भीतर नहीं घुस
नें दिया क्योंकि उन का सन्देह था कि वे अं
गरेजों के सहायक हैं– ११ तारीख को ९ई
भारी तोपें और १० गुब्बारे बड़े कश्मीरी
दरवाज़े के समीप लगा दिये नगर के ऊप
र अग्नि का बरषाना आरम्भ किया और
एक दो बार शत्रुओं के हमले को बड़ी शूरता
से पराजय दी– १२ वीं सिरकारी रसद
के ऊंटों को देहली के उपद्रवियों नें लूटना
चले गए हाकिम नें दूसरे दिन प्रातःकाल पे
ड़ काटु कन दिया तदनन्तर बुगुल के बजनें के
समय ४१ सिपाही और थोड़े पुरानें असरोंनें
सरकारी आज्ञा से मुख फेरे और जो २ शुभ चि
न्तक थे सब पूर्व्ववत काम करते रहे इस खब
र के पहुंचते ही कलकत्ते से सेना रवानें हुई
और उन की बारकों के सन्मुख ठहरी और उ
न से कहला भेजा कि जिस समय तुम अपने
२ काम पर जाओगे तो तुम्हारी नालिश सुनी
जायगी तदनन्तर उन्होंनें इस्से निषेध किया
और विशेष ढीठ होगए रविवार के दिन १०
बजे परेट हुई सब सेना उन की बारकों के सन्मु
ख जमा ई गई और करनैल मिकांजी साहिब
बहादुर असरक मान नें कहला भेजा कि बन
नैरजनरल का हुक्म अपनी मौकूफी के विष
य का सुनजांय यह सुनकर एक २ दो २ बा
हर आये तदनन्तर बहुहुक्म पढ़ा गया और
सुनाया गया और समझाया गया थोड़ी देर
के पीछे उन्होंनें कहा कि करनैल साहिब
हमारी मौकूफी मंज़ूर करें और निश्चय कर
नें को एक महकमा जारी होय तदनन्तरों
नें बातें स्वीकार हुईं और कहा कि अपने शुभ
चिन्तक साथियों के साथ होजाओ तदनन्तर
बहुत विलम्ब के पीछे बहुत से जा मिले औ
र अनुमान ४० के रह गए और कहा कि ह
म काम न करैंगे और वे उसी समय पकड़े
गए परन्तु सो दिन पीछे छूट गए और नि
श्चय करनें की कचहरी बैठी हुई है और
अनुमान आधी पल्टन के जवाब ले लिये
गए हैं वहां सब प्रकार आनन्द है–––

आगरा––– एक बनिये का लड़
का अनुमान १६ वर्ष की अवस्था का ता
जगंज का रहनें वाला शनीचर के दिन
वेलन गंज अपनी सुसराल में आया और
वहां से वेलन गंज के घाट पर जमुना न्हा
नें को गया उस के गले में एक सुवर्ण की
गोफ और हाथों में कड़ूले और अंगूठी
थी उसको एक मेवाती गोते खोर ताक
कर टांग पकड़ के ले गया और ताजगंज
के नीचे उस मरे हुए के आभूषण उता
र रहा था कि एक घट वाले की दृष्टि पड़ी
और वह माल समेत पकड़ा गया और
इकरार करता है अब निश्चय हो रहा है
जैसा कुछ होगा पीछे लिखा जायगा–––

शिवनारायण के एहतमाम से मतबअ़ मुफ़ीद ख़लायक़ शहर
आगरा मुहल्ले पीपल मण्डी में छापागया

श्री शिवनारायण द्वारा आगरे के पीपलमंडी से प्रकाशित पत्र 'सर्ब्बोपकारक' के पृष्ठ, 5 अक्टूबर 1858

ऐतिहासिक पत्र-प्रत्रिकाएं : चेतना की मुखर वाणी

हिंदी के स्वरूप को निखारने में पत्र-पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है । इस खंड के अंतर्गत पत्र-पत्रिकाओं के विपुल भंडार से उन चंद उपलब्ध दुर्लभ पत्र-पत्रिकाओं को प्रदर्शित किया गया है जिन्होंने अपने समय में न केवल देश की जन चेतना को एक सशक्त वाणी प्रदान की थी, बल्कि हिंदी को एक भाषाई व वैचारिक प्रखरता प्रदान करते हुए राष्ट्र के नवजागरण की चेतना में सक्रिय हस्तक्षेप भी किया था । इतिहास के विभिन्न पड़ावों पर प्रकाशित इन पत्र-पत्रिकाओं की झांकी से किसी भी हिंदी प्रेमी का रू-ब-रू होना निश्चित रूप से बेहद रोमांचकारी अनुभव होगा ।

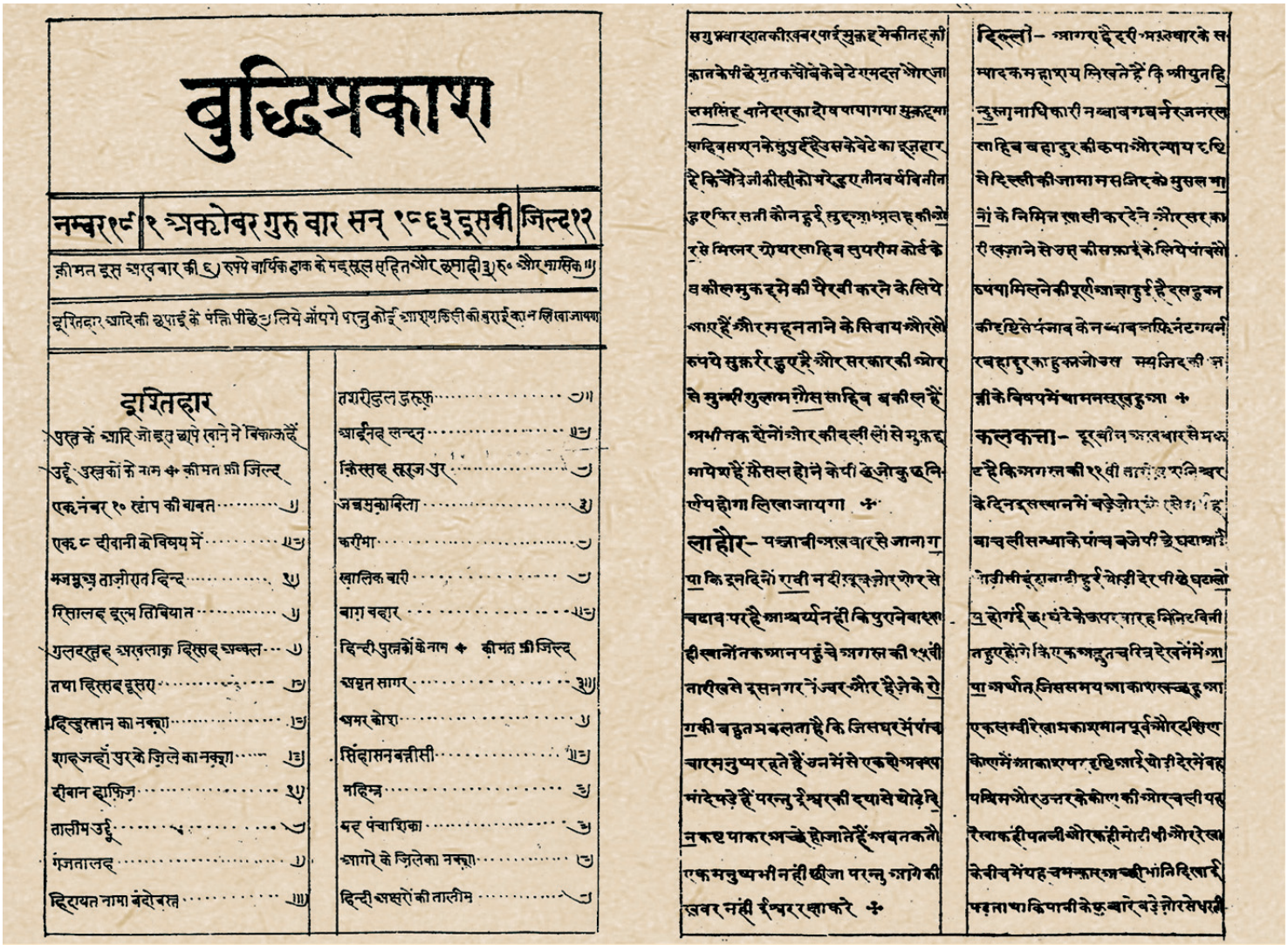

बुद्धिप्रकाश

नम्बर १९ | १ अक्टोबर गुरु वार सन १८६३ इसवी | जिल्द १२

क़ीमत इस अखबार की ६) रुपये वार्षिक डाक के महसूल सहित और छमाही ३) रु० और मासिक ॥)

इश्तिहार आदि की छपाई के पंक्ति पीछे =) लिये जायगे परन्तु कोई आशय किसी की बुराई का न लिखा जायगा

इश्तिहार

पुस्तकें आदि जो इस छापे खाने में बिकाऊ हैं

उर्दू पुस्तकों के नाम ❖ क़ीमत फ़ी जिल्द

एक नंबर १० स्टांप की बाबत ...... ।)
एक ८ दीवानी के विषय में ...... ।=)
मजमूअ ताज़ीरात हिन्द ...... १।)
रिसालह इल्म तिबियात ...... ।)
गुलदस्तह अखलाक़ हिस्सह अव्वल ... ।)
तथा हिस्सह दूसरा ...... ।=)
हिन्दुस्तान का नक्शा ...... ।=)
शाहजहाँ पुर के ज़िले का नक्शा ...... ।≡)
दीवान हाफ़िज़ ...... १।)
तालीम उर्दू ...... ≡)
गंजतालह ...... ।)
हिदायत नामा बंदोबस्त ...... ।।।)
तशरीहुल हुरूफ़ ...... -)॥
आईनह लन्दन ...... ॥=)
क़िस्सह सूरज पुर ...... =)
जब्रमुक़ाबिला ...... ३)
करीमा ...... -)
खालिक बारी ...... =)
बाग़ बहार ...... ॥=)

हिन्दी पुस्तकों के नाम ❖ क़ीमत फ़ी जिल्द

अमृत सागर ...... ३॥)
अमर कोश ...... ।)
सिंहासन बत्तीसी ...... ॥=)
महिम्न ...... =)
भट्ट पंचाशिका ...... =)
आगरे के ज़िले का नक्शा ...... ।=)
हिन्दी अक्षरों की तालीम ...... -)

सगु अखबार स्तान की खबर पाई मुक़द्दमे की नक़ल क़ातके पीछे मृतक चौबे के बेटे एमदत्त और जासमसिंह थानेदार का दोष पाया गया मुक़द्दमा साहिब सशन के सुपुर्द है उसके बेटे का इज़हार है कि चौबे जी की स्त्री को मरे हुए तीन वर्ष बितीत हुए फिर सती कौन हुई मुद्दआ अलह की ओर से मिस्टर ग्रोथर साहिब सुपरीम कोर्ट के वकील मुक़द्दमे की पैरवी करने के लिये आए हैं और महनताने के सिवाय और से रुपये मुक़र्रर हुए हैं और सरकार की ओर से मुन्शी गुलाम गौस साहिब वकील हैं अभी तक दोनों ओर की दलीलों से मुक़द्दमा पेश है फ़ैसल होने के पीछे जो कुछ निर्णय होगा लिखा जायगा ❖

लाहौर— पञ्जाबी अखबार से जाना गया कि इन दिनों रावी नदी बड़े ज़ोर शोर से चढाव पर है आश्चर्य नहीं कि पुराने बास्ते ही स्थानों तक आन पहुंचे अगस्त की १५वीं तारीख से इस नगर में ज्वर और हैज़े के रोग की बहुत प्रबलता है कि जिस घर में पांच चार मनुष्य रहते हैं उनमें से एक दो अवश्य मांदे पड़े हैं परन्तु ईश्वर की दया से थोड़े दिन कष्ट पाकर अच्छे होजाते हैं अब तक तौ एक मनुष्य भी नहीं छीजा परन्तु आगे की खबर नहीं ईश्वर रक्षा करे ❖

दिल्ली— आगरा हेरल्ड अखबार के सम्पादक महाशय लिखते हैं कि श्रीयुत हिन्दुस्तानाधिकारी नव्वाब गवर्नर जनरल साहिब बहादुर की कृपा और न्याय दृष्टि से दिल्ली की जामा मसजिद के मुसलमानों के निमित्त खाली कर देने और सरकारी खज़ाने से उस की सफ़ाई के लिये पांच सौ रुपया मिलने की पूर्ण आज्ञा हुई है इस हुक्म की दृष्टि से पंजाब के नव्वाब लफ़िटनेंट गवर्नर बहादुर का हुक्म जो उस मसजिद की उन्नति के विषय में था मनसूख हुआ ❖

कलकत्ता— इंगलिशमैन अखबार से प्रकट है कि अगस्त की २१वीं तारीख शनिश्चर के दिन इस स्थान में बड़े ज़ोर [illegible] हवा चली सन्ध्या के पांच बजे पीछे घटा आई थोड़ी सी बूंदा बांदी हुई थोड़ी देर पीछे घटा खुल गई [illegible] ग्यारह मिनिट बीते हुए होंगे कि एक अद्भुत चरित्र देखने में आया अर्थात जिस समय आकाश स्वच्छ हुआ एक लम्बी रेखा प्रकाशमान पूर्व और दक्षिण कोण में आकाश पर दृष्टि आई थोड़ी देर में वह पश्चिम और उत्तर के कोण की ओर चली यह रेखा कहीं पतली और कहीं मोटी थी और रेखा के बीच में यह चमत्कार अच्छी भांति दिखाई पड़ता था कि पानी के फुहारे बड़े ज़ोर से धरती

19वीं शती के मध्य में छपे पत्र 'बुद्धिप्रकाश' के पृष्ठ, 1 अक्टूबर 1863

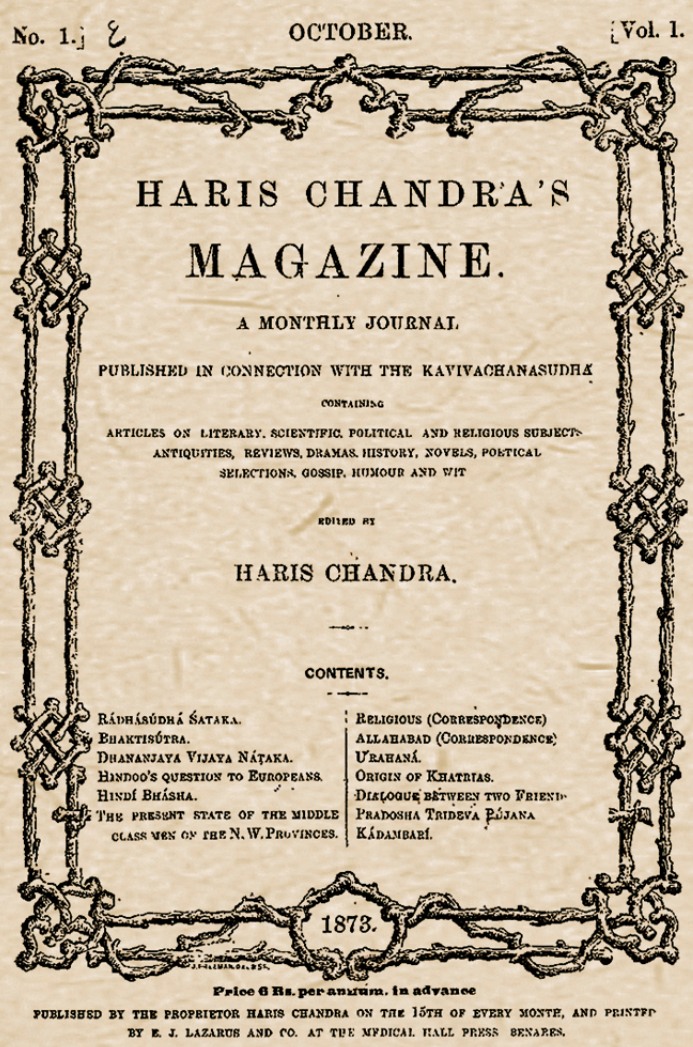

No. 1.] ६ OCTOBER. [Vol. 1.

HARIS CHANDRA'S MAGAZINE.

A MONTHLY JOURNAL

PUBLISHED IN CONNECTION WITH THE KAVIVACHANASUDHA

CONTAINING

ARTICLES ON LITERARY, SCIENTIFIC, POLITICAL AND RELIGIOUS SUBJECTS ANTIQUITIES, REVIEWS, DRAMAS, HISTORY, NOVELS, POETICAL SELECTIONS, GOSSIP, HUMOUR AND WIT

EDITED BY

HARIS CHANDRA.

CONTENTS.

Rádhásúdhá Śataka.
Bhaktisútra.
Dhananjaya Vijaya Náṭaka.
Hindoo's question to Europeans.
Hindí Bhásha.
The present state of the middle class men of the N. W. Provinces.
Religious (Correspondence)
Allahabad (Correspondence)
Urahaná.
Origin of Khatrias.
Dialogue between two Friends
Pradosha Trideva Pújana
Kádambarí.

1873.

Price 6 Rs. per annum, in advance

PUBLISHED BY THE PROPRIETOR HARIS CHANDRA ON THE 15TH OF EVERY MONTH, AND PRINTED BY E. J. LAZARUS AND CO. AT THE MEDICAL HALL PRESS BENARES.

HARIS CHANDRA'S MAGAZINE.

A MONTHLY JOURNAL PUBLISHED IN CONNECTION WITH THE KAVIVACHANASUDHA.

Vol. I.] Benares October 15th, 1873. [No 1.

॥ अथ श्रीराधासुधा शतकं लिख्यते ॥

॥ श्रीराधावल्लभो जयति ॥

दोहा ।

श्रीवृषभानु कुमारि के पग बंदेा कर जेार । जे निसि बासर उर धरैं ब्रज बसि नंदकिशोर ॥ १ ॥ कीरति कीरति कुवंरि की कहि कहि थके गनेस । दससत मुख बरनन करत पार न पावत सेस ॥ २ ॥ अज सिव सिद्ध सुरेस मुख जपत रहत निस जाम । बाधा जन की हरत है राधा राधा नाम ॥ ३ ॥ राधा राधा जे कहैं ते न परैं भव फंद । जासु कंध पर कमल कर धरे रहत ब्रजचंद ॥ ४ ॥ राधा राधा कहत हैं जे नर आठेा जाम । ते भव सिंधु उलंघि के बसत सदा ब्रज धाम ॥ ५ ॥ बंदेा पग पंकज सदा नंद नंदन ब्रज चंद । राधा सत बरनन करत फिर न परेां भव फंद ॥ ६ ॥ नित्य किशेार निकुंज बन यह गोकुल गोलेाक । छिन बिछुरत नाहि न दुवेा विचरत श्री गोअेाक ॥ ७ ॥ सेवत ललितादिक सखी जे प्रिय परम प्रवीन । कोटि कोटि छवि आगरी सुर मुनि वरनन कीन ॥ ८ ॥ गुरुपद हिय में धारिके सुमृत वेद परमान । हठी कछुक बरनन करत राधा रूप निधान ॥ ९ ॥ रिषि सुदेव वसु ससि * सहित निरमल मधु कें पाय । माधेा तृतिया भृगु निरखि रच्येा ग्रंथ सुखदाय ॥ १० ॥ सत कबित्त मेादक सहित सुधा सार इन माहि । रसिक भ्रमर ते लहत हैं ब्रज कदंब की छांह ॥ ११ ॥

* १८३७ संवत ।

कवित्त ।

काहू कें सरन संभु गिरजा गनेस सेस काहू को सरन है कुबेर ऐसे धेारी केा । काहू केा सरन मच्छ कच्छ बलिराम राम काहू कें सरन गेारी सांवरीसी जेारी केा ॥ काहू कें सरन बेाध बावन बराह व्यास येही निरधार सदा रहे मति मेारी केा । आनद करन बिधि बंदत चरन एक हठी कें सरन वृषभान की किशेारी केा ॥ १२ ॥ कलपलता के किधेां पल्लव नवीन देाऊ हर्ने मंजुता के कंजता के बनिता के हैं । पावन पतित गुन गावे मुनि ताके छवि छले सब तांके जन ताके गुरताके हैं ॥ नऊनिधि ताके सिद्धता के अद्य आले हठी तीनेां लेाकताके प्रभुताके प्रभुताके हैं । कटैं पाप ताके बढे पुन्य के पताके जिन ऐसे पद ताके वृषभान की सुता के हैं ॥ १३ ॥ केामल विमल मंजु कंज से अरुन सेाहैं लच्छन समेत सुभ सुद्ध कंदनी के हैं । हरी के मनालय निरालय निकारनके भक्ति बरदायक बषाने छंद नीके हैं ॥ ध्यावत सुरेस संभु सेस आे गनेस खुले भाग अवनी के जहा मंद परैंनीके हैं । कटे जम फंदनीय द्वंद्वनीय हर हरि बंदनी चरन वृषभाननंदनी के हैं ॥ १४ ॥ मख मल माखन से इंदु की मयूखन से नूतन तमाल पत्र आभा आभरन हैं । गुल से गुलाल से गुलाब जपा जावक से पावक * प्रवाल लाल गावे भूधरन हैं ॥ उमापति रमापति जमापति आठेा जाम ध्यावत रहत चार फल के फरन हैं ॥ पंकज बरन छवि छवि के

* सुवर्ण ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' के प्रथम अंक का मुखपृष्ठ, 15 अक्तूबर 1873

Cover page of the first issue of "Harish Chandra Magazine", a monthly magazine edited by Harishchandra,15 October 1873.

रजिस्टर्ड नम्बर ३

NATIONAL LIBRARY
No.
Date
CALCUTTA

कविवचनसुधा

साप्ताहिकपत्र

नित नित नव यह कविवचनसुधा सकल रसखानि। पीअहु रसिक अनन्द भरि परम लाभ जियजानि १
सुधा सदा सुरपुर बसै सो नहिं तुम्हरे जोग। तासों आदर देहु अरु पिअहु याहि बुध लोग। २

जिल्द ५ काशी चंद्रवार आषाढ शुक्ल ७ सम्वत १९३१ नम्बर ४७

कविवचनसुधा
चंद्रवार २० जुलाई सन् १८७४

दुःखंदुष्टैः सतां मा भवतु रतिरिने स्याच्च मुक्तास्य धर्मो स्वायत्ता स्यात्स्वनाशः ... रतु कृतौ स्वरयो मत्सरः स्युः स्त्रीपुंसौ तुल्यमीशोऽवतु भवतु जनो मोदितो प्राप्य दुःखं ग्राम्योक्तिभ्यो विदूरे भवतु रुचिरलं काव्यपीयूषवृष्टिः

श्रीमती की भारतवर्षीय प्रजा राज्यप्रबन्ध में उच्चपदाधिकारी क्यों नहीं होती

उत्कृष्ट गुणशालिनी श्रीमती महारानी की भारतवर्षीय प्रजा राज्य प्रबन्ध में कमिश्नर जज्ज वा कलेक्टर आदि उच्च पद क्यों नहीं पाती क्यों उनके लिये इंगलण्ड में सिविल सर्विस के परीक्षा की कैद की गई है यदि हम कहें कि उन में उक्त पदों के पाने की योग्यता नहीं तो यह बात असंभव ठहरती है क्या लक्षावधि मनुष्यों में दस पांच भी इस योग्यता के नहीं हैं जिन को ऐसी २ पदवी दी जाय हां इस बात से तो वे लाचार हैं कि भगवान् ने उन का चमड़ा गोरा नहीं किया वाह रे ईश्वर! हिन्दुस्तानियों की लक्ष्मी अन्य देशवालों को दे श्रीमन्त से इन्हें भिक्षाटन के पात्र कर सदा शिव बना दिया पर सेव्य सेवक भाव इन से न छुटाया महेश्वर होकर भी ईश्वरता का स्वच्छन्दता का यह गुण इनमें न आया परतंत्र और सेवक ही बने रहे।

अब यहां पर विचार करना चाहिये कि उक्त पद पाने के हेतु कौन २ गुण मनुष्यों में होना उचित हैं विद्या निष्पक्षपात निर्लोभता सचाई दया इत्यादि जैसा याज्ञवल्क्य ने भी लिखा है "श्रुताध्ययन सम्पन्ना धर्मज्ञाः सत्यवादिनः राज्ञा सभासदः कार्य्या रिपौ मित्रे च ये समाः" श्रुति अर्थात् मीमांसा व्याकरण आदि वा वेद का जानने वाला धर्मज्ञ धर्मशास्त्र में कुशल सत्य वक्ता शत्रु और मित्र में समदृष्टि अर्थात् रागद्वेष से रहित ऐसे को सभासद अर्थात् न्याय दर्शक राजा को करना चाहिये प्राचीन समय में ये गुण तो इस देश के मनुष्यों में अवश्य रहे होंगे क्यों कि स्मृति ही प्रमाण है, फिर चाणक्य विष्णुशर्मा आदि ऐसे २ लोग भी हो गये हैं जिन के बनाए कामन्दकी आदि ग्रन्थ भी वर्त्तमान हैं जिन में राज्य प्रबन्ध का कैसा उत्तम वर्णन किया गया है मुसलमानों के राज्य में भी बहुधा इस देश वाले इस विषय में बड़े कुशल हो गये हैं जैसा राजा मान सिंह, टोडरमल, महम्मूद गवन, शिवा जी, हैदर अली, बाजीराव, रंजीत सिंह, प्रभृति कैसे २ असामान्य बुद्धि वाले हो गये हैं। भया इस पुरानी गाथा से हमें क्या प्रयोजन है वर्त्तमान समय में देखना चाहिये कि कोई इस पद पाने के योग्य हैं कि नहीं वर्त्तमान समय में भी सर सलार जंग, सर जंग बहादुर, सर राजा देव नरायण सिंह, सैय्यद अहमद खां, सर राजा दिनकर राव, राजा शिवप्रसाद, आदि कैसे २ बुद्धिमान लोग विद्यमान हैं जिन की बुद्धि कौशल राज्य प्रबंध के विषय में सभों को प्रगट है यदि सरकार भारतवर्ष वालों को ऐसे पद देने का उद्यत हो तो कितने इस योग्यता के निकलेंगे जो रा

समाचारावली

— रेव० मि० नारायण शेषाद्रि ने अपने यूरप और अमेरिका के यात्रा का सविस्तर वर्णन फ्रीजनरल असेंब्ली हाल में किया।

अनन मेगजी नामक पचीस वर्ष के ब्राह्मण ने एक आठ वर्ष के बालिका से बलात्कार किया वह बालिका उसके पास पड़ोसी जानकर दियासलाई लेने गई थी अब वह बाटली वाले के औषधालय में है और वह नीच कारागार में भेजा गया।

अयोध्या-प्रान्त के कारागार में सन १८७३ में सब मिलाकर चौदह हजार तीन सौ तीस कैदी थे।

बरार-प्रान्त में सब मिलाकर दो लाख छप्पन हजार एक सौ चार एकर जमीन में चाह बोई थी।

काठियावाड-के हलार प्रान्त में पांच मनुष्य बिज्जुपात होने से मरे।

सेन्ट पीटर्स वर्ग में प्रोफेसर राथलिंग संस्कृत कोश छाप रहे हैं।

सूरत-तापी नदी पर पुल वर्षा ऋतु के अनन्तर बनना आरम्भ होगा इस काम का प्रारंभ गवर्नर साहब करेंगे।

रंगने का यंत्र— मि० डब्ल्यू० जे० एडिस सिविल इंजीनियर ने रेशम सूत कपड़ा आदि रंगने के निमित्त एक नवीन यंत्र निकाला है इससे कपड़ा बहुत जलदी रंगा जाता है।

गत जून मास में बिलायत से ओन्नीस करोड सैंतीस लाख पचास हजार रुपये का माल बाहर गया और चौंतीस करोड बारह लाख पचास हजार रुपये का माल बाहर से बिलायत में आया।

चीनी लोगों ने तोफ और अनेक प्रकार के शस्त्र बनवाये हैं और जहाज पर से युद्ध करने के निमित्त कई जहाज बनवाये हैं।

गत वर्ष में ब्रिटिश बर्मा प्रदेश में हिन्सक पशु मारने के निमित्त दो हजार पांच सौ पछत्तर रुपये पारितोषिक दिये गये सब मिलाकर दो सौ अठारह हिन्सक पशु मारे गये उन में एकतालीस बड़े बाघ छत्तीस उनके बच्चे तेंहतीस बड़े चीते चार उनके बच्चे तेरह बड़े भालू आठ उनके बच्चे और तेंहतीस बड़े सूअर और पचास उनके बच्चे थे।

दिल्ली के-म्यूनीसिप्यालिटी ने नगर भर में जल यंत्र लगाने के निमित्त साढे पांच लाख रुपये सरकार से ऋण मांगे हैं इस कार्य के निमित्त अनुमान आठ लाख रुपये लगेंगे।

गया—एक मनुष्य के गृह में एक बकरी का बच्चा विलक्षण पैदा हुआ जिसका माथा एक हाथ पैर चार २ और पुच्छ दो हैं परन्तु एक घंटे के अनन्तर मर गया उसने उसे एक चर्मकार को दे दिया उसने उसकी अतड़ी निकाल रख दी है जो कोई देखने जाता है प्रति मनुष्य से एक पैसा लेकर दिखलाता है उस बिचारे की एक जीविका हो गई॥ वि०

आग बुझाने की कल बिलायत में बनी है आगरे में एक डांक्टर साहब के यहाँ आई है इससे आग बहुत ही शीघ्र बुत जाती है इसका मूल्य केवल पौने दो सौ रुपये हैं सरकार को उचित है कि इसे प्रत्येक पुलीस स्टेशन पर रक्खे।

समय विनोद में एक विलक्षण समाचार लिखा है कि ग्राम एली प्रान्त इटावे में दिन के चार बजे से पांच बजे तक मांस और रुधिर की वर्षा हुई चार सौ बीघा ज़मीन में यह उपद्रव हुवा था

सेन्ट लुई रीपब्लिकन नामक समाचार पत्र से ज्ञात होता है अमेरिका में एक प्राचीन नगर और राजगृह का कुछ दिन पूर्व शोध लगा है यह नगर गिला नदी के तट पर है राजगृह बहुत बड़ा है प्रायः उस में पत्थर का काम बना है उस में एक सूर्य की मूर्त्ति कुछ तांबे के शस्त्र सुवर्ण के आभूषण ऐसे ही कई दूसरे पदार्थ मिले हैं इस बृहत घर का शोध अभी भली भांति नहीं हुआ है परन्तु यह गृह सहस्र वर्ष पूर्व का बना हुवा और इसके बनाने वाले बड़े बुद्धिमान ज्ञात होते हैं।

दो महीने से रूसियों के इंजीनियर हाम्नदरी को नाप रहे हैं और स्थान चारज से हिरात तक एक सड़क बनवाई है जिस पर दो हज़ार मज़ूर काम करते हैं और एक दूसरी सड़क मेम्नातक बन रही है तीसरी सड़क बुखारा से मशहद तक बनती है।

चीन देश का एक दरजी बिलायती कल से कपड़ा सीने लगा सो उसके भाई बन्दों ने उसे जाति से निकाल दिया।

बम्बई-नार्थ ब्रूक गार्डन यह बाग शीघ्र ही तैय्यार हो जायगा।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र द्वारा संपादित साप्ताहिक पत्र 'कविवचनसुधा' के अंक के कुछ पृष्ठ, 20 जुलाई 1874

Extracts from the July issue of "Kavivachansudha", a weekly publication edited by Bhartendu Harishchandra, 20 July 1874.

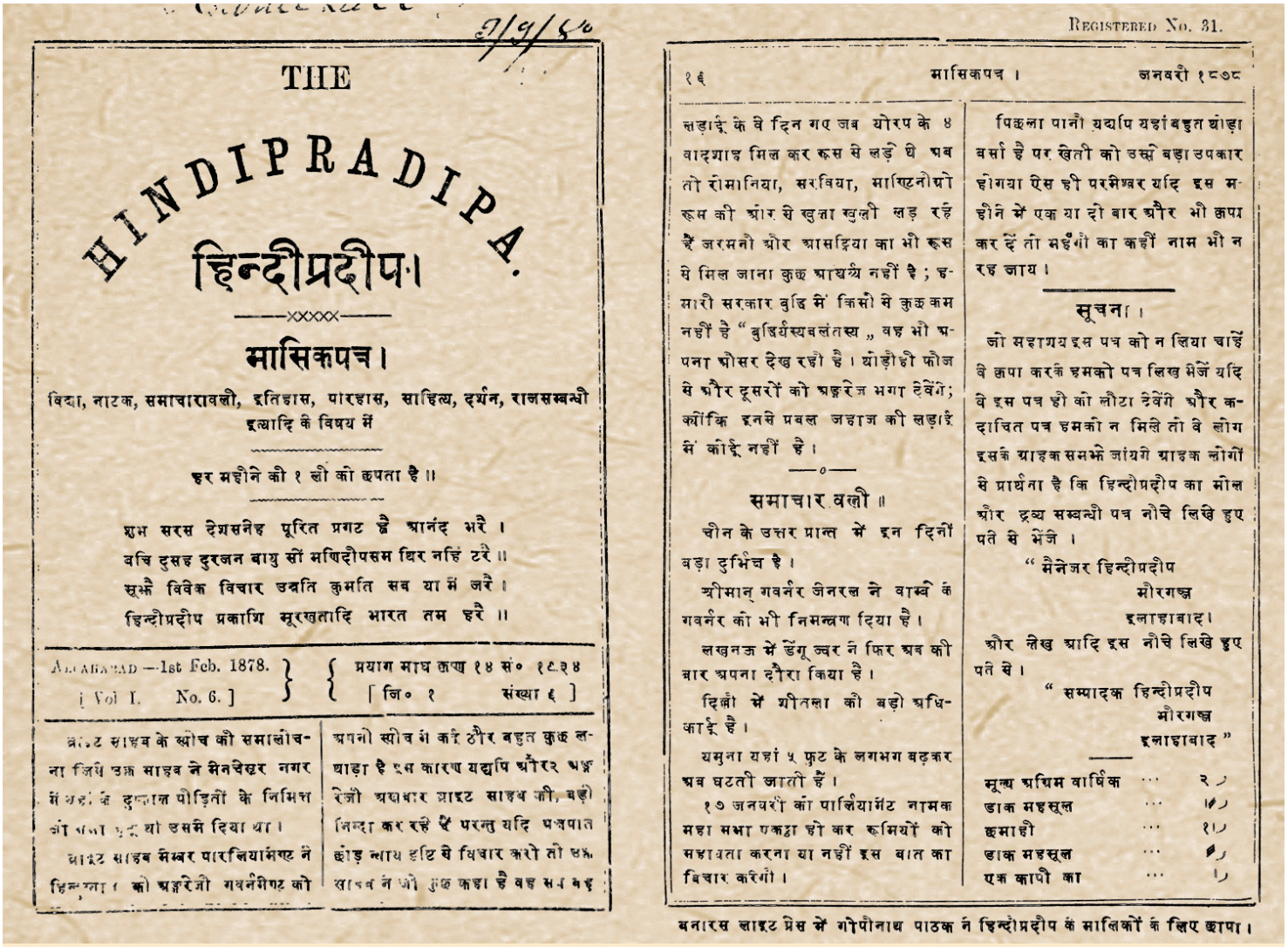

THE

HINDIPRADIPA.

हिन्दीप्रदीप।

मासिकपत्र।

विद्या, नाटक, समाचारावली, इतिहास, परिहास, साहित्य, दर्शन, राजसम्बन्धी इत्यादि के विषय में

हर महीने की १ ली को छपता है ॥

शुभ सरस देशसनेह पूरित प्रगट ह्वै आनंद भरै ।
बचि दुसह दुरजन बायु सों मणिदीपसम थिर नहिं टरै ॥
सूझै विवेक विचार उन्नति कुमति सब या में जरै ।
हिन्दीप्रदीप प्रकाशि मूरखतादि भारत तम हरै ॥

ALLAHABAD —1st Feb. 1878. [Vol I. No. 6.]

प्रयाग माघ कृष्ण १४ सं० १९३४ [जि० १ संख्या ६]

[illegible]ट साहब के स्पीच की समालोचना जिसे उक्त साहब ने मैनचेस्टर नगर में यहां के दुष्काल पीड़ितों के निमित्त [illegible] था उसमे दिया था।

[illegible] साहब मेम्बर पारलियामेण्ट ने हिन्दुस्तान को अङ्गरेजी गवर्नमेण्ट को अपनी स्पीच में कई ठौर बहुत कुछ लथाड़ा है इस कारण यद्यपि औरर अङ्गरेजी अखबार ग्राइट साहब की, बड़ी निन्दा कर रहे हैं परन्तु यदि पक्षपात छोड़ न्याय दृष्टि से विचार करो तो [illegible] साहब ने जो कुछ कहा है वह सब [illegible]

REGISTERED No. 31.

लड़ाई के वे दिन गए जब योरप के ४ बादशाह मिल कर रूस से लड़े थे अब तो रोमानिया, सरविया, माण्टिनीग्रो रूस की ओर से खुल्ला खुल्ली लड़ रहे हैं जरमनी और आसट्रिया का भी रूस से मिल जाना कुछ आश्चर्य नहीं है ; हमारी सरकार बुद्धि में किसी से कुछ कम नहीं है "बुद्धिर्यस्यबलंतस्य„ वह भी अपना औसर देख रही है। थोड़ीही फौज से और दूसरों को अङ्गरेज भगा देवेंगे; क्योंकि इनसे प्रबल जहाज की लड़ाई में कोई नहीं है।

—o—

समाचारवली ॥

चीन के उत्तर प्रान्त में इन दिनों बड़ा दुर्भिच्छ है।

श्रीमान् गवर्नर जेनरल ने बाम्बे के गवर्नर को भी निमन्त्रण दिया है।

लखनऊ में डेंगू ज्वर ने फिर अब की बार अपना दौरा किया है।

दिल्ली में शीतला की बड़ी अधिकाई है।

यमुना यहां ५ फुट के लगभग बढ़कर अब घटती जाती हैं।

१७ जनवरी को पार्लियामेंट नामक महा सभा एकट्ठा हो कर रूमियों को सहायता करना या नहीं इस बात का बिचार करेगी।

पिछला पानी यद्यपि यहां बहुत थोड़ा बर्षा है पर खेती को उस्से बड़ा उपकार होगया ऐस ही परमेश्वर यदि इस महीने में एक या दो बार और भी कृपा कर दें तो महँगी का कहीं नाम भी न रह जाय।

सूचना।

जो महाशय इस पत्र को न लिया चाहें वे कृपा करके हमको पत्र लिख भेजें यदि वे इस पत्र ही को लौटा देवेंगे और कदाचित पत्र हमको न मिले तो वे लोग इसके ग्राहक समझे जांयगे ग्राहक लोगों से प्रार्थना है कि हिन्दीप्रदीप का मोल और द्रव्य सम्बन्धी पत्र नीचे लिखे हुए पते से भेजें।

"मैनेजर हिन्दीप्रदीप
मीरगञ्ज
इलाहाबाद।

और लेख आदि इस नीचे लिखे हुए पते से।

"सम्पादक हिन्दीप्रदीप
मीरगञ्ज
इलाहाबाद"

मूल्य अग्रिम वार्षिक	...	२)
डाक महसूल	...	।≠)
छमाही	...	१।)
डाक महसूल	...	≠)
एक कापी का	...	।)

बनारस लाइट प्रेस में गोपीनाथ पाठक ने हिन्दीप्रदीप के मालिकों के लिए छापा।

साहित्यिक मासिक पत्र 'हिंदी प्रदीप' के कुछ अंश, 1878
Extracts from "Hindi Pradip", a literary weekly, 1878.

सरस्वती श्रुतिमहती न हीयताम्

काशी

नागरीप्रचारिणी सभा

के अनुमोदन से

प्रतिष्ठित

सम्पादक-समिति

(१) बा० कार्त्तिक प्रसाद खत्री

(२) पं० किशोरी लाल गोस्वामी

(३) बा० जगन्नाथ दास, बी. ए.

(४) बा० राधाकृष्ण दास

(५) बा० श्यामसुन्दर दास, बी. ए.

181.S6.93.1(1)

सरस्वती

सचित्र हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रथम भाग

सन् १९०० ई०

इण्डियन प्रेस, प्रयाग, से छपकर प्रकाशित

सरस्वती

सचित्र मासिकपत्रिका

भाग १] जनवरी १९०० ई० [संख्या १

भूमिका

परम कारुणिक सर्वशक्तिमान जगदीश्वर की अशेष अनुकम्पाही से ऐसा अनुपम अवसर आकर प्राप्त हुआ है कि आज हमलोग हिन्दी भाषा के रसिकजनों की सेवा में नये उत्साह से उत्साहित हो एक नवीन उपहार लेकर उपस्थित हुए हैं जिसका नाम

सरस्वती

है। भरतमुनि के इस महावाक्यानुसार कि "सरस्वती श्रुति महती न हीयताम्", अर्थात् सरस्वती ऐसी महती श्रुति है कि जिसका कभी नाश नहीं होता, यह निश्चय प्रतीत होता है कि यदि हिन्दी के सच्चे सहायक और उससे सच्ची सहानुभूति रखने वाले सहृदय हितैषियों ने इसे समुचित आदर और अनुराग पूर्वक ग्रहण कर यथोचित आश्रय दिया तो अवश्यमेव यह दीर्घजीविनी होकर निज-कर्त्तव्य-पालन से हिन्दी की समुज्वल कीर्त्ति को अचल और दिगन्तव्यापिनी तथा स्थायी करने में समर्थ होगी।

यद्यपि हमलोग महाकवि कालिदास के कथनानुसार वामन होकर उत्तुँग-शाखास्थित महाफल के प्राप्त करने की अभिलाषा करते हुए जन समाज में हास्यास्पद होने का उपक्रम करते हैं, किन्तु तौ भी क्या हमलोगों की ऐसी चपलता, कि जिसके मूल में नये उद्योग, उत्साह, उपकारिता और कार्यतत्परता की सुहावनी सुगन्धि सनी हुई है, उदारचरित रसज्ञों और समदर्शी सहयोगियों के क्षमा करने, सराहने और उत्तेजना देने योग्य न समझी जायगी ? तो फिर हिन्दी के उत्साहियों, हितैषियों, उन्नायकों, रसज्ञों और सहयोगियों से ऐसी अखण्डनीय आशा क्यों न की जाय कि वे लोग सब प्रकार से अपनी बाहु-लता की शीतल छाया में इस नवीन बालिका को आश्रय देने में कदापि पराङ्-मुख न होंगे, कि जिनके सन्मुख आज यह अपने नये रंग ढंग, नये वेशविन्यास, नये उद्योग उत्साह और नई मनोमोहिनी छटा से उपस्थित हुई है।

हिंदी मासिक पत्रिका 'सरस्वती' का प्रथम अंक, जनवरी 1900 ई०

First page of the inaugural issue of "Saraswati", a Hindi monthly magazine, January 1900.

Registered A. 1380

स्वास्थ्य

वर्ष १ | कानपुर अक्टूबर १९२४. | अङ्क १

वैज्ञानिक चमत्कार की

आवश्यक अद्भुत और नित्य के काम की चीजें।

॥ सुनहरी रिस्टलेट वाच ॥

बिल्कुल नये फ़ेशन की, निहायत सोफ़ियानी, गोल अथवा चौकोर शेप, सुनहरा गोल, चमकदार, डायल निहायत मज़बूत मशीन ठीक और सच्चा समय बताने वाली–विद्यार्थी, अध्यापक, वकील, रईस, दफ़्तर के बाबू लोग सब ही के काम की चीज़ है–स्त्री, पुरुष सब ही की कलाई की शोभा बढ़ाने में अद्वितीय है—गारन्टी ३ साल, मूल्य कलाई पर बाँधने की सुनहरी चैन सहित ६), डाक व्यय अलग।

बिजली के पाकेट (जेबी) लैम्प।

अँधेरे में हर वक़्त काम आने वाली भारी ज़रूरत की चीज़ है–बिल्कुल डिबिया की तरह का है–बटन दबाते ही फ़ौरन रोशनी होजाती है न दियासलाई की ज़रूरत पड़ती है न तेल की–गाँव, क़सबों और जङ्गलों में रहने वालों और यात्रियों के बड़े काम की चीज़ है–मूल्य २) ३) ५), बिजली की मशाल बढ़िया बृटिश मेक मूल्य ४) ६) ८)

कानपुर इलेक्ट्रिक एन्ड ट्रेडिङ्ग कम्पनी, कानपुर।

वार्षिक मूल्य | स्वास्थ्य कार्य्यालय–मेस्टन रोड कानपुर से प्रकाशित। | प्रति कापी ≡)

L152391/84 P-F

स्वास्थ्य।

मासिक-पत्र।

वर्ष १ | अक्टूबर १९२४. | अङ्क १

कुछ अपने विषय में।

———:o:———

हम कौन थे, क्या होगये, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर यह समस्यायें सभी॥
[–भारत भारती]

प्राचीन इतिहासों, पुराणों एवं दूसरे ग्रन्थों के देखने व सुनने से पता चलता है कि हमारे पूर्वज बड़े ही निरोग, बलवान, मेधावी और दीर्घ-जीवी होते थे–सौ सौ दो दो सौ वर्ष से भी अधिक जीवित रहते थे। प्राचीन काल में सौ वर्ष तक जीवित रहना एक साधारण सी बात थी। किन्तु वर्तमान समय के साथ जब इसकी तुलना करते हैं तो आकाश पाताल का अन्तर जान पड़ता है। आज कल भारत वासियों का स्वास्थ्य इतना बिगड़ गया है कि १००-२०० वर्ष जीने की बात केवल कहानी मात्र अथवा कवि की कल्पना सी जान पड़ती है।

प्राचीन काल की बात जाने दीजिये वर्तमान समय में भी पाश्चात्य देशों के साथ तुलना करने से यही पता चलता है कि हम लोगों की दशा अति ही शोचनीय है। हमारा स्वास्थ्य दिनों दिन अधोगति को प्राप्त होता जा रहा है एवं हम लोग नित्य नये रोगों के शिकार बनते जारहे हैं उक्त देशों के मुकाबिले में हमारे देश-वासियों की आयु का प्रमाण तो आधा रह गया है और मृत्यु संख्या तिगुनी से भी अधिक बढ़ गई है, जैसा कि नीचे के अङ्कों से जान पड़ता है।

कानपुर से प्रकाशित पत्रिका 'स्वास्थ्य' का आवरण पृष्ठ व प्रथम पृष्ठ, अक्तूबर 1924

First page of 'Swasthya', a magazine published from Kanpur, October 1924.

सम्मेलन-पत्रिका

(नवीन संस्करण)

भाग १ | माघ, १९८५ वि० | संख्या १,

(१) हिन्दी विश्वविद्यालय

[लेखक पं० दयाशंकर दुबे एम० ए०]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के परीक्षा विभाग और हिंदी विद्यापीठ की स्थापना सम्मेलन के निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिये की गई है :—

(१) उच्चशिक्षा प्राप्त युवकों में हिंदी का अनुराग उत्पन्न करने और बढ़ाने के लिये प्रयत्न करना।

(२) हिंदी भाषा द्वारा परमोच्च शिक्षा देने के लिये विश्वविद्यालय स्थापित करना।

(३) हिंदी भाषा द्वारा उच्च परीक्षाएं लेने का प्रबन्ध करना।

सम्मेलन के परीक्षा विभाग द्वारा प्रति वर्ष प्रथमा, मध्यमा, उत्तमा, अरायज़, नवीसी और मुनीमी की परीक्षाएं भारत के भिन्न भिन्न स्थानों में ली जाती हैं। इन में परीक्षार्थियों की संख्या की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। संवत् १९८५ में परीक्षा केंद्रों की संख्या ९७७ थी और उन में दो हज़ार से अधिक परीक्षार्थी सम्मिलित हुए थे। भारत के भिन्न भिन्न भाग में हिंदी प्रचार के कार्य में इन परीक्षाओं द्वारा बड़ी सहायता मिल रही है।

सम्मेलन-पत्रिका

अर्थात्

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की त्रैमासिक मुखपत्रिका

[नवीन संस्करण]

भाग—१ अङ्क—१

(जन्म सं० १९७० वि०)

सम्पादक

धीरेन्द्र वर्म्मा एम० ए०

साहित्य मन्त्री,

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग द्वारा प्रकाशित

माघ, १९८५ वि०

धीरेन्द्र वर्मा द्वारा सम्पादित हिंदी साहित्य सम्मेलन की त्रैमासिक पत्रिका 'सम्मेलन पत्रिका' का मुखपृष्ठ व प्रथम पृष्ठ, 1928

The cover page and first page of the quarterly newsletter of the Hindi Sahitya Sammelan, edited by Dhirendra Verma, 1928.

* ॐ *

जात-पात तोड़क

मासिक पत्रिका ।

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्त मेषाम् ।
समानं मंत्र मभिंमत्रयेवः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥
ऋ० अ० ८ अ० ८ व० ४९ मं० ३

वर्ष १. } काशी १५ अगस्त १९२८ { संख्या १

सम्पादक--कविराज कृष्णचन्द्र शर्मा ।

—:०:—

लेख सूची ।

१—सम्पादकीय विचार १
२—अवान्तर भेद—ले०, श्रीनरेन्द्रदेव जी ... ४
३—विवाह सम्बन्ध—ले०, श्री महामना मदनमोहन मालवीय जी ७
४—जात-पात का जंजाल—ले०, श्री कृष्णदेव प्रसाद गौड़ एम० ए० ... ... ११
५—जातीय-बन्धन—ले० श्रीरामचन्द्र वर्मा ... १४
६—जात-पात और सफलता – ले०, श्री महेस प्रसाद जी मौलवी फाजिल १७
७—समाचार संग्रह १९

LIB 1887/84 Pd/T

कविराज कृष्णचन्द्र शर्मा द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका 'जात-पात तोड़क' का पृष्ठ, 15 अगस्त 1928

First page of 'Jaat-Paat Torak', a monthly newsletter edited by Kaviraj Krishna Chandra Sharma, 15 August 1928

श्रीः

सुधा

विविध विषय-विभूषित, साहित्य-संबंधी, सचित्र

मासिक पत्रिका

वर्ष १, खंड १

श्रावण-पौष, ३०५ तुलसी-संवत् (१९८४ वि०)

अगस्त-जनवरी, १९२७-२८ ई०

प्रधान संपादक

श्रीदुलारेलाल भार्गव

श्रीरूपनारायण पांडेय

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय, लखनऊ

वार्षिक मूल्य ६॥)] [छमाही मूल्य ३॥)

श्री दुलारेलाल भार्गव एवं श्री रूपनारायण पांडेय द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका 'सुधा' का मुखपृष्ठ, अगस्त–जनवरी, 1927-28

Cover page of "Sudha", a Hindi monthly jointly edited by Shri Dulare Lal Bhargava and Shri Rupnarayan Pandeya, August-January, 1927-28.

SHELF LISTED

विशाल-भारत

प्रथम वर्ष खण्ड १	माघ—१९८४ जनवरी—१९२८	संख्या १

सम्पादक— बनारसीदास चतुर्वेदी

संचालक— रामानन्द चट्टोपाध्याय

श्रीशारदा-स्तुति

कहति गिरा यों गुनि कमला उमा सौं चलौ,
भारत-मही में पुनि मंजु छबि छाजैं हम।
राखैं जौ न नेंकु टेक जन-मन-रंजन की,
हरि हर बिधि की बृथा ही बाम बाजैं हम॥
माख मानि बैठ्यौ ऐंठि लाड़िलौ हमारौ ताकौं,
करि मनुहार सुधा-धार उपराजैं हम।
साजैं सुख-संपतिकै सकल समाज आज
चलि 'रतनाकर' कौं नैसुक निवाजैं हम्॥

जगन्नाथ दास 'रत्नाकर'

वार्षिक मूल्य ६)
वी० पी० द्वारा ६॥)

प्रवासी-प्रेस, ९१ अपर सर्कुलर रोड, कलकत्तामें मुद्रित।
[फोन नं० ३२८१ बड़ाबाजार]

छमाही ३॥)
विदेशमें

बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका 'विशाल भारत' का मुखपृष्ठ एवं उसमें प्रकाशित कविता, जनवरी 1928

Cover page and poem extracted from a rare copy of "Vishaal Bharat", a Hindi monthly edited by Banarsi Das Chaturvedi, January 1928.

श्रीः

बालिका

सम्पादिका--श्रीमती जानकीदेवी 'विशारद' उप-सम्पादक--पं० श्रीकृष्ण शुक्ल 'विशारद'

उत्तम गुणों को सीख-पढ़ कर मोद की हो मालिका।
आदर्श-भारत-भामिनी होवे हमारी "बालिका" ॥

भाग १ | चैत्र संवत् १९८५ वि०, मार्च १९२८ | संख्या १

विनय

[लेखक—साहित्यशास्त्री पं० जगन्नारायणदेव शर्म्मा 'कविपुष्कर' विशारद]

सुनकर विनय पावन प्रभो! हमको सुखद वर दीजिये।
हम बालिकायें आपकी, कृपया शरण में लीजिये ॥
शिक्षा लहें संसार में, अच्छे गुणों से प्रेम हो।
माता-पिता को मोद दें, विद्या कला का नेम हो ॥१॥
हम दुर्गुणों को दूर कर, हों सद्गुणों की संगिनी।
आदर्श भावों पर चलें, सुख-शान्ति की हो अंगिनी ॥
निज जाति और स्वदेश की, सेवा करे यह 'बालिका'।
कोमल पदों में लीन हो, सुख को सरे यह 'बालिका' ॥२॥

श्रीमती जानकीदेवी 'विशारद' द्वारा सम्पादित पत्रिका 'बालिका' का प्रथम पृष्ठ, मार्च 1928

First page of 'Balika', a journal edited by Smt. Janki Devi 'Visharad', March 1928.

हंस-वाणी

हंस का जन्म

हंस के लिये यह परम सौभाग्य की बात है, कि उसका जन्म ऐसे शुभ अवसर पर हुआ है, जब भारत में एक नए युग का आगमन हो रहा है, जब भारत पराधीनता की बेड़ियों से निकलने के लिये तड़पने लगा है। इस तिथि की यादगार एक दिन देश में कोई विशाल रूप धारण करेगी। बहुत छोटी-छोटी, तुच्छ विजयों पर बड़ी-बड़ी शानदार यादगारें बन चुकी हैं। इस महान् विजय की यादगार हम क्या और कैसे बनावेंगे, यह तो भविष्य की बात है, पर यह विजय एक ऐसी विजय है, जिसकी नज़ीर संसार में नहीं मिल सकती और उसकी यादगार भी वैसी ही शानदार होगी। हम भी उस नये देवता की पूजा करने के लिये, उस विजय की यादगार क़ायम करने के लिये, अपना मिट्टी का दीपक लेकर खड़े होते हैं। और हमारी बिसात ही क्या है! शायद आप पूछें, संग्राम शुरू होते ही विजय का स्वप्न देखने लगे! उसकी यादगार बनाने की भी सूझ गई! मगर स्वाधीनता केवल मन की एक वृत्ति है। इस वृत्ति का जागना ही स्वाधीन हो जाना है। अब तक इस विचार ने जन्म ही न लिया था। हमारी चेतना इतनी मंद, शिथिल और निर्जीव हो गई थी, कि उसमें ऐसी महान् कल्पना का आविर्भाव ही न हो सकता था; पर भारत के कर्णधार महात्मा गांधी ने इस विचार की सृष्टि कर दी। अब वह बढ़ेगा, फूले-फलेगा। अब से पहले हमने अपने उद्धार के जो उपाय सोचे, वह व्यर्थ सिद्ध हुए, हालाँकि उनके आरम्भ में भी सत्ताधारियों की ओर से ऐसा ही विरोध हुआ था। इसी भाँति इस संग्राम में भी एक दिन हम विजयी होंगे। वह दिन देर में आयेगा या जल्द, यह हमारे पराक्रम, बुद्धि और साहस पर मुनहसर है। हाँ, हमारा यह धर्म है कि उस दिन को जल्द-से-जल्द लाने के लिये तपस्या करते रहें। यही हंस का ध्येय होगा, और इसी ध्येय के अनुकूल उसकी नीति होगी।

हंस की नीति

कहते हैं, जब श्रीरामचंद्र समुद्र पर पुल बाँध रहे थे, उस वक्त छोटे-छोटे पशु-पक्षियों ने मिट्टी ला-लाकर समुद्र के पाटने में मदद दी थी। इस समय देश में उससे कहीं विकट संग्राम छिड़ा हुआ है। भारत ने शान्तिमय समर की भेरी बजा दी है। हंस भी मानसरोवर की शान्ति छोड़कर, अपनी नन्ही-सी चोंच में चुटकी-भर मिट्टी लिये हुए, समुद्र पाटने—आज़ादी के जंग में योग देने—चला है। समुद्र का विस्तार देखकर उसकी हिम्मत छूट रही है; लेकिन संघ-शक्ति ने उसका दिल मज़बूत कर दिया है। समुद्र पटने के पहले ही उसकी जीवन-लीला समाप्त हो जायगी, या वह अन्त तक मैदान में डटा रहेगा, यह तो कोई ज्योतिषी ही जाने; पर हमें ऐसा विश्वास है, कि हंस की लगन इतनी कच्ची न होगी। यह तो हुई उसकी राजनीति। साहित्य और समाज में वह उन गुणों का परिचय देगा, जो परम्परा ने उसे प्रदान कर दिये हैं।

डोमिनियन और स्वराज्य

न डोमिनियन माँगे से मिलेगा, न स्वराज्य। जो शक्ति डोमिनियन छीनकर ले सकती है, वह स्वराज्य भी ले सकती है।

मुंशी प्रेमचन्द द्वारा सम्पादित पत्रिका 'हंस' का मुखपृष्ठ व उसमें छपा एक लेख, 1930

Cover page and extracts from 'Hans', a journal edited by Munshi Premchand, 1930.

कृपा

[रचयिता—व्रज-भाषा-काव्य-सम्राट श्रीजगन्नाथदास 'रत्नाकर']

बड़े-बड़े आनि उपमान तव नैननि के,
करत बखान जिन्हैँ मान प्रतिभा कौ है।
कहै 'रतनाकर' हमैँ तौ पै न जानि परै,
इनको बड़ाई मैँ विधान समता कौ है॥
एतियै लखाति औ इतीयै कहि जाति बात,
पलकनि बीच विस्व-छितिज छमा कौ है।
एक-एक कोर करुना कौ वरुनालय है,
एक-एक पारावार पूरित कृपा कौ है॥

उमाशंकर मेहता द्वारा संपादित पत्रिका 'दम्पति', काशी, 1930

"Dampatti", a journal edited by Umashankar Mehta, Kashi, 1930.

बिहार और उड़ीसा तथा सी० पी० और बरार—
गवनमेण्टों एवं ग्वालियर, सैलाना और धार स्टेटोंके शिक्षा-विभागों द्वारा स्वीकृत

गंगा

सचित्र हिन्दी-मासिक पत्रिका

प्रवाह १ | आश्विन, संवत् १९८८—अक्टूबर, सन् १९३१ | तरंग १२ पूर्ण तरंग १२

श्रद्धेय विद्यार्थीजी

पण्डित श्रीराम शर्मा बी० ए०

सन् १९१३ ई० की बात है। मैं अखाड़ेसे लौट कर बोर्डिङ्ग हाउसमें घुसा ही था कि, मेरे एक साथीने कहा कि, 'प्रताप' निकल गया। समाचार-पत्र पढ़नेका शौक मुझे छोटेपनसे रहा है। उन दिनों ई० सी० हाई स्कूल, खुर्जा, की ९ वीं कक्षामें पढ़ता था और समाचार-पत्र-सम्बन्धी ज्ञानमें मैं अपनेको अन्य विद्यार्थियोंकी अपेक्षा बहुत बढ़ा हुआ समझता था; और, अब मैं महसूस करता हूँ, उस थोथे ज्ञानकी पुष्टि की थी लकीरके फकीर—परीक्षा-फलको योग्यताकी कसौटी समझनेवाले—मेरे कई भले अध्यापकोंने। नवीन समाचार-पत्रका नाम सुनते ही, बिना स्नान किये और अखाड़ेकी मिट्टीसे सना, मैं 'प्रताप'-दर्शनके लिये चला गया।

सचित्र हिंदी-मासिक पत्रिका, 'गंगा' का प्रथम पृष्ठ, अक्टूबर 1931

First page of "Ganga", an illustrated Hindi monthly.

ज्येष्ठ सं० १९८८ वि०
मई सन् १९३१ ई०

महिला

समाज, धर्म, साहित्य, संगीत, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, शिक्षा, गृहशिल्प, बालजीवन, स्वास्थ्यरक्षा आदि विविध विषय-विभूषित स्त्रियोपयोगी सचित्र मासिक पत्रिका।

वर्ष १
अङ्क १

इस अंक में पढ़िये

१—महिला-समाज और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र।
२—गृहस्थ परिवार का आदर्श।
३—घरूशासन या होम-रूल (कहानी)
४—लाज (कविता)
५—स्त्री-जाति।
६—वीर क्षत्राणी जया। (ऐतिहासिक)
७—भारत का वर्तमान महिला-आन्दोलन।
८—फ़ारस देश का महिला-समाज इत्यादि।

र्षिक मूल्य ३) रु०
सम्पादिका—श्रीरामप्यारीदेवी, 'चन्द्रिका'
प्रति अङ्क ।-)

Lib 125/84 PML

ॐ

महिला

महिला-संसार में एक दम जीवन-जागृति और बलिदान की भावना उत्पन्न करने वाली विविध-विषय-विभूषित सचित्र मासिक-पत्रिका।

वर्ष १ | अजमेर मई सन् १९३१ ई० | अङ्क १

महिला

[श्री पं० गयाप्रसादजी शास्त्री, 'श्रीहरि']

(१)

इस असार-संसार में, महिला सुख की सार।
रसिक-हृदय होता जहां, वारवार बलिहार॥

(२)

फूलें भारत देवतरु सुख-समृद्धि के फूल।
घर घर हो महिला-मयी 'महिला' मंगल-मूल॥

श्रीरामप्यारी देवी द्वारा सम्पादित, मासिक पत्रिका 'महिला', मई 1931

"Mahila", a Hindi monthly edited by Shrirampyari Devi, May 1931.

विश्वमित्र

वार्षिक मूल्य ६)
विदेशके लिए १२ शिलिङ्ग

सम्पादक
डा० हेमचन्द्र जोशी डी० लिट्
इलाचन्द्र जोशी

प्रति संख्या ।)
As. 8/- per copy.

भाग १, खण्ड १ | अक्तोबर १९३२—आश्विन १९८९ | सं० १, पूर्ण-संख्या १

सूत्रधारके प्रति

तुम देखो, हम नाट्य करें।
राम, तुम्हारी रङ्गभूमिमें, कहो, कौन-सा रूप धरें ?

हाव-भाव जो आगे आवें,
भावें अथवा तुम्हें न भावें,
वे न हमारे समझे जावें,
हम कोई भी स्वांग भरें,
तुम देखो, हम नाट्य करें।

खेलें, डोलें, हंस लें, बोलें,
अनायास कुल के कुल हो लें,
तनिक इसी मिष गा लें रो लें,
हम अलिप्त, किस हेतु डरें,
तुम देखो, हम नाट्य करें।

किन्तु धारणा तुच्छ हमारी,
पावें हम सब वारी वारी—
अलख सूचना सदा तुम्हारी,
तुम तारक, हम क्यों न तरें,
तुम देखो, हम नाट्य करें।

—मैथिलीशरण गुप्त।

डॉ. हेमचन्द्र जोशी एवं इलाचन्द्र जोशी द्वारा सम्पादित पत्रिका 'विश्वमित्र' का आवरण पृष्ठ व उसमें प्रकाशित मैथिलीशरण गुप्त की कविता, अक्तूबर 1932

Cover page and a poem by Maithilisharan Gupt extracted from "Vishvamitra", a journal jointly edited by Dr. Hemchandra Joshi and Ilachandra Joshi, October 1932.

अर्थ-विज्ञान, व्यवसाय-वाणिज्य, कला-कौशल और गृह शिल्प विषय विभूषित

(मध्यप्रदेश का एकमात्र युगप्रवर्त्तक)

सम्पादक-विद्याभूषण पं० मोहन शर्मा, विशारद.

वर्ष १ श्रावण १९९०] [अङ्क १ अगस्त १९३३ ई०

पैसा ।

(लेखिका-श्री० इन्दिरा देवी जी वैद्यशास्त्रिणी आयुर्वेदमणि)

पैसा यदि पास में नहीं है, तो न कोई बात,
पूंछता कहाँ से तुम आये, कहाँ जाओगे।
मूंद लेता आंखें, यह विश्व भी निठुर बन,
जागता भी सोता, किसे सोतेसे जगाओगे ॥
मित्र, पुत्र, बान्धव बुलाने से न आते पास,
प्रेम प्रतिमा सी प्रिया अङ्क में न पाओगे।
गूंथोगे जो मुक्तासम आंसुओं की मञ्जुमाल,
होगे असहाय किसे दौड़ पहनाओगे ॥१॥

वार्षिक मूल्य ३) प्रकाशक— प्रति संख्या ।=)
भैयालाल नाथ चौहान बनखेड़ी G.I.P.

D ③
२१/२६८/८४ P८४

एक पैसा

(लेखक—श्री पं० कन्हैयालाल जी मिश्र "प्रभाकर" विद्यालंकार, एम० आर० ए० एस०)

शाम का समय था और सर्दी की मौसम। सहारनपुर के स्टेशन पर टिकट खरीदने के बाद मैं एक बैंच पर बैठा गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। सहसा मेरी दृष्टि एक भद्र पुरुष पर पड़ी, जो बेचैनी के साथ बार बार अपने बटुये और जेबों को टटोल रहे थे। मैंने सोचा इनका कुछ खोगया है। मैं अपनी पुस्तक पढ़ने लगा। कुछ देर बाद मेरा ध्यान फिर उनकी ओर गया, वे अब भी व्यग्रता के साथ इधर उधर देख रहे थे, उनके चेहरे मोहरे और वेष-विन्यास से गहरी सज्जनता टपक रही थी। हृदय ने कहा ये कहीं दूर के रहने वाले हैं और तुम यहीं पास के? ये इस समय किसी व्यग्रता में हैं. नागरिकता के नाते तुम्हें यदि होसके तो इनकी कुछ सेवा करनी चाहिये उठकर उनके पास गया और बड़ी नम्रता से उनसे पूछा मैं बहुत देर से देख रहा हूं कि आप किसी परेशानी में हैं। सम्भवतः आपकी कोई बहुमूल्य वस्तु खोगई है। मैं इसी जिले का एक निवासी हूं। कृपाकर यदि गोप्य न हो तो बतलाइये कि क्या बात है? और मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं? उन भद्र पुरुष ने मेरी ओर देखा। मेरे खद्दर के वेष और इस व्यवहार ने उनके मन में मेरे प्रति आत्मीयता सी उत्पन्न कर दी। हंसकर बोले-"मेरी कोई बहुमूल्य वस्तु नहीं खोगई है, जानकारी की कमी के कारण टिकिट के मूल्य में कुछ कमी रह गई है मैं यही सोच रहा हूं कि यह कमी यहां कैसे पूरी करूं"!

मैंने पूछा-आपको कितने रुपयों की आवश्यकता है? एक संकोच-मिश्रित हास्यरेखा उनके अधर मण्डल पर थिरक उठी' दबी जबान से उन्होंने कहा-"क्या कहूं, समय की बात है एक पैसे की आवश्यकता है। आप मेरी यह अंगूठी ले लीजिये और कृपा कर मुझे एक रु० दे दीजिये, मैं देहली पहुंचकर एक रु० आपको भेज दूंगा।' मैंने उनकी अंगूठी वापिस करते हुए कहा-आप यह क्या कह रहे हैं? आपको जितने धन की आवश्यकता हो उपस्थित किया जा सकता है।

अंगूठी पहिनते हुये उन्होंने कहा-"एक रुपया तो मैं वैसे ही कह रहा था" आवश्यकता तो वास्तव में मुझे केवल एक ही पैसे की है. आप मुझे एक ही पैसा दे दीजिये।" मैंने जेब से अपना बटुआ निकाला देखा पर हाय उसमें भी एक पैसा नहीं था। बच्चों के लिये बिस्कुट खरीदने में, किराये के अतिरिक्त मेरी अर्थराशि निःशेष हो चुकी थी। मैं बहुत सकपकाया, लज्जा से उन भद्र पुरुष की ओर देखना कठिन होगया। बड़ी मुश्किल से मैंने कहा-ठहरिये मैं अभी प्रबन्ध करता हूं। टिकिट घर के पास जाकर मैंने अपना टिकिट ।=) में बेचा और वे पैसे उन महाशय के सामने उपस्थित किये! बड़ी कठिनता से उन्होंने ।) लिये। मैं शहर लौट गया और एक मित्र से १) लेकर दूसरी गाड़ी से घर आया।

इस घटना का मुझ पर जो प्रभाव पड़ा, वह समय की अधिकता से कम नहीं होसकता हम वैभव के अभिमान में छोटी चीज का कुछ मूल्य नहीं समझते और यह भूल जाते हैं कि हमारा यह विशाल वैभव कुछ कणों का संग्रह ही तो है।

विद्या भूषण पं0 मोहन शर्मा 'विशारद' द्वारा सम्पादित मासिक पत्रिका 'पैसा', अगस्त 1933

"Paisa", a Hindi monthly edited by 'Vidyabhushan', Pt. Mohan Sharma, Visharad, August 1933.

हिंदुस्तानी

हिंदुस्तानी एकेडेमी की तिमाही पत्रिका

भाग ३ | जनवरी, १९३३ | अंक १

कबीर साहब की साखी

[१]

[लेखक—श्रीयुत परशुराम चतुर्वेदी, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०]

साखी शब्द संस्कृत 'साक्षी' का अन्यतम रूप है और इस का मूल अर्थ है "वह पुरुष जिस ने किसी वस्तु अथवा घटना को अपनी आँखों देखा हो"। ऐसे साक्षात् अनुभव द्वारा ही किसी वस्तु अथवा घटना का यथार्थ ज्ञान होना संभव है, जिस कारण साक्षी या साखी शब्द से अभिप्राय प्रायः उस पुरुष से हुआ करता है जो उक्त विषय पर कोई विवाद खड़ा होने पर, निर्णय करते समय प्रमाणस्वरूप समझा जा सके। संतों की सिद्धांतमयी 'बानियों' के लिए, जान पड़ता है, साखी शब्द इसी अर्थ में व्यवहृत हुआ है क्योंकि इन साखियों की ओर हमारा ध्यान बहुधा ऐसे अवसरों पर ही विशेष रूप से जाना संभव है जब कि हमारे दैनिक जीवन में कभी कभी नैतिक, आध्यात्मिक अथवा व्यावहारिक विषयों को उलझनें सामने आ जाती हैं और भ्रम अथवा संदेह के अंधकार को दूर करने के लिए हमें ज्ञान के आलोक की आवश्यकता पड़ती है।

हिंदुस्तानी एकेडेमी की तिमाही पत्रिका 'हिंदुस्तानी' का प्रथम पृष्ठ, जनवरी 1933

Cover page of 'Hindustani', the quarterly newsletter of Hindustani Academy, January 1933.

Regd. No. L-3649

❀ ओ३म् ❀

खरी बात

सच सुन मुख न करे मलिन, सोई नर पहचानिए।
खरी बात कहना कठिन, सुनना उससे कठिनतर॥

वर्ष १] लाहौर, सोमवार ९ सितम्बर, १९३५ ई० [अङ्क १

बापू
का
खरा
सन्देश

L.b. 34/84 (?)

भारत में बने
ओ. के. बिजली के पंखे
देखने में सुन्दर
चलने में टिकाऊ
और फिर स्वदेशी हैं।
एक बार आजमा कर देखें।
The O. K. Electric Works Ltd.
The Mall, Lahore.

बोर्ड आव डाइरेक्टर

१. आन. रायबहादुर रामशरणदास सी. आई. ई. मैम्बर कौंसल आफ स्टेट चेयरमैन।
२. ला० बालकिशन चोपरा
३. रायसाहब रामजक्ष
४. ला० बिशन
५. ला० [illegible]
६. [illegible]

वार्षिक मूल्य ४)] दुर्गादास भास्कर

दुर्गादास भास्कर द्वारा सम्पादित लाहौर से प्रकाशित पत्रिका 'खरी बात' जिसमें बापू जी का संदेश प्रकाशित है, का आवरण पृष्ठ, 9 सितम्बर 1935

Cover page of 'Khari Baat', a journal edited by Durgadas Bhaskar of Lahore. This issue also contains a message from Gandhiji, 9 September 1935.

हास्यरस-प्रधान पाक्षिक-पत्र

सम्पादक—
पं० केदारनाथ भट्ट

आगरा, तारीख़ १५ नवम्बर १९३८

वार्षिक मूल्य—एक रुपया
एक अंक का—तीन पैसे

भारत में बना "सूरज" बल्ब

कम-खर्च, खास-रोशनी, टिकाऊ-पन के लिये प्रसिद्ध।

प्रान्तीय सरकार के उद्योग-विभाग से

तीन हज़ार की सहायता प्राप्त

तथा

सब सरकारी महकमों, म्यूनिसिपल व डिस्ट्रिक्ट बोर्ड, बिजली कंपनियों में व्यवहार के लिये गवर्नमेंट द्वारा स्वीकृत।

दी हिन्दुस्तान इलेक्ट्रिक लैम्प वर्क्स लि०

आगरा।

॥ श्री ॥

नोंक-झोंक

वर्ष १ Vol. 1 | आगरा, १५ नवम्बर १९३८। Agra, November 15, 1938. | अंक १ No. 1

अपनी बात

थोड़े से में अपनी बात भी कह दें। बैठे-बिठाए तबीयत हुई कि एक पत्र निकाल दिया जाय। दुनिया से दूर रहने पर भी, कभी-कभी देखने सुनने में आ ही जाता था कि लोग शिकायत करते हैं कि हिंदी में कोई हास्य-रस या मनोरंजन का ऐसा पत्र नहीं, जिसे सब पढ़ सकें और जिसमें बेराक-टाक सब की समालोचना की जा सके।

हमारा हरगिज़ यह ख्याल नहीं कि वैसे-ही सनसनी फैलाने की ग़रज़ से ऐसी बातें प्रकाशित की जायँ जिनसे व्यर्थ में किसीका दिल तो दुखे पर भला न दीन का हो, न दुनिया का। पर जहाँ सर्व-साधारण को नुक़सान पहुँचने की संभावना है, वहाँ किसी डर से, किसी मसहलत-पालिसी या अन्य स्वार्थ-गत कारण से चुप रहना, पत्र-कार के पवित्र कर्तव्य के प्रतिकूल है। जो व्यक्ति सचमुच समाज के किसी अंग का नेता है या चाहता है कि उसे लोग लीडर समझें, उसकी वास्तविक मनो-वृत्ति और किये हुए कार्यों पर प्रकाश डालना पत्रकार का प्रकृत धर्म होना चाहिए। यदि पत्रकार से इतना भी बननपड़ा कि लोगों को धोखे से बचावे, तो उसका होना न होना बराबर है।

सांसारिक-जीवन के प्रायः सभी विभागों में आजकल रंभ और पाखंड का राज्य छाया हुआ है। उस राज्य के विरुद्ध बग़ावत करना—कम से कम शांति-मय क़लम से ही सही—मनुष्य मात्र का प्रथम धर्म है। हम यथा-शक्ति ऐसा ही करने का संकल्प लेकर प्रकट हुए हैं।

हमें मालूम है कि अभी दो-तीन महीनों तक पत्र का रूप पूर्ण-तया निश्चित न हो सकेगा। जैसे लेख पढ़ने की आशा और इच्छा हमारे ग्राहकों को हुई होगी, उसको हम अभी पूरा करने में शायद सफल नहीं हो रहे हैं; परन्तु हमारे पाठक धैर्य रक्खें। उन्हीं के लिये तो यह सब आयोजन हैं। जैसे वे चाहेंगे, जो उन्हें अच्छा लगेगा, वैसे और वही सब मनोरंजन का सामान हम उनके चित्त-विनोदार्थ पेश करेंगे। साथ ही साथ अपने देश और समाज के हित को सदा लक्ष्य में रक्खेंगे।

बातें बहुत करनी हैं पर अभी पूरा साल भर पड़ा है। ऐसी जल्दी क्या है।

कृपाऽभिलाषी—केदारनाथ भट्ट

वक्तव्य और सूचना

(१) छै सौ पचास के क़रीब ग्राहक बन जाने पर यह पत्र निकाला जा रहा है। वर्ष के बीच में किसी सूरत में भी बंद होने का अंदेशा नहीं।

(२) जिन सज्जनों ने ग्राहक होना स्वीकार कर लिया है और वार्षिक मूल्य अभी तक नहीं दिया है, उनसे प्रार्थना है कि शीघ्र दे दें। जिन्हें नमूना मिले, वे एक रुपये का मनीआर्डर भेजकर ग्राहक बन जायँ।

(३) इस अंक की पंद्रह सौ प्रतियाँ छापी जा रही हैं। ग्राहकों के अतिरिक्त हर एक बड़े शहर और केन्द्र में एजंसियों की व्यवस्था हो चुकी है।

(४) पत्र का दूसरा अंक १५ दिसंबर १९३८ को निकलेगा। इसका कारण यह है कि हमको प्रेस तथा आफिस की व्यवस्था, रजिस्ट्री इत्यादि में कुछ समय लगाना पड़ेगा। एक महीने बाद दूसरा अंक निकलने से यह न समझा जाय कि हम वर्ष में एक अंक कम देंगे। वर्ष में पूरे चौबीस ही अंक दिये जायँगे। अतएव ग्राहक-गण और पाठक-गण १५ दिसंबर के बाद से हर पंद्रहवें दिन अपना अपना पत्र पाते रहेंगे।

—मैनेजर

पं केदारनाथ भट्ट द्वारा संपादित हास्य-रस प्रधान पाक्षिक पत्र 'नोंक-झोंक' का मुखपृष्ठ व सम्पादकीय, 15 नवम्बर 1938

Cover page and editorial of 'Nonk Jhonk', a humeur based Hindi newsletter, edited by Pandit Kedar Nath Bhatt, 15 November 1938.

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 1228
Date 3-1-72
GOVT. OF INDIA
20/11/8
89143
D5691

❀ बन्देमातरम् ❀

हलधर

HALDHAR.

वर्ष १] इटावा, शनिवार १५ जौलाई, सन् १६३६ ई० [अङ्क १

एजेन्टों से–

१—कमसे कम १० कापियाँ प्रतिवार नियमित रूप से लेने वाले ही 'हलधर' के एजेन्ट समझे जावेंगे।

२—एजेन्टोंको प्रतिकापी =) आना 'हलधर कार्यालय' में पेशगी जमा करना होगा। उदाहरण के तौर पर जो एजेन्ट दस कापी प्रतिवार लेना चाहें, उसे १।) रु० कार्यालय में पेशगी भेजने होंगे।

३—एजेण्टों को ५० प्रतिशत कमीशन दिया जायेगा, डिलेवरी अलग देना होगा, कापी वापिस न ली जाँयगीं।

४—प्रतिमास की पहिली तारीखको एजेन्टों के पास बिल भेज दिये जावेंगे। रुपया सातवीं तारीख तक कार्यालय में पहुंच आना चाहिये।

विज्ञापन-दाताओं से–

१—'हलधर' में प्रकाशनार्थ विज्ञापन जिस अङ्क में छपाना हो, उससे कम से कम ५ दिन पूर्व भेजना चाहिये।

२—विशेष परिस्थितियों को छोड़कर विज्ञापन की पूरी छपाई पेशगी ले ली जावेगी। ३ इञ्च से कम विज्ञापन छपाने वालों को Voucher Copy बिना मूल्य नहीं दी जाती।

३—विज्ञापन छपाई के रेटस्:–
कालम इञ्च के हिसाब से प्रतिवार

१ से ५० इञ्च ...	।) चार आना
५१ से २०० इञ्च ...	≡) तीन आना
२०० से ५०० इञ्च ...	=) दो आना
५०१ से १००० इञ्च ...	–)॥ डेढ़आना
१००१ से अधिक इञ्च ...	–) एक आना

सम्पादक :—
श्री विद्यासागर दीक्षित।

हमारा ध्येयः—
पिटे, पिसे, पीड़ित जन-समाज में नवजीवन का सञ्चार कर
आने वाली क्रान्ति के लिये तैयार करना।

वार्षिक मूल्य	१)
छःमाही	॥=)
एक प्रति का	)॥

अपनी बात–

हिन्दोस्तान,के इस सन्देह युक्त वातावरण में जब कि आज राष्ट्र के जीवन और मरण की बहुत सी सङ्घर्ष-मयी प्रति-क्रियाओं से भारत का रङ्ग-मञ्च हिल उठा है। जब कि समाजवाद, साम्राज्यवाद और अधिनायकवाद तथा भिन्न २ राजनीतिक स्वार्थों और मत-भेदों से भारत की राजनीति कलुषित हो उठी, उस वक्त जब कि हमारा पथ दुर्गम, हमारी साधनायें सीमित, और हमारी मञ्जिलें दूर हैं। देश की स्वतन्त्रता के पुण्य-प्रयत्न में लगे होने पर भी हमने अपने को परिस्थितियों का गुलाम बना रक्खा है। उदाहरणार्थ जिस उद्देश्य की मनोहर कल्पनाओं से प्रेरित होकर हमने मन्त्रित्व ग्रहण किया था, वे सर्वथा निराशाजनक ही प्रमाणित हुई! चुनावों में हमने देश के किसानों से यह वायदा किया था, कि कौंसिलों में जाकर हम उनकी गरीबी दूर करेंगे। जिस की वजह से मौजूदा तकलीफें और आये दिन होने वाले जुल्मों से राहत मिलेगी। लेकिन किसान कही जाने वाली देश की लगभग सत्तर प्रतिशत आबादी की दशा आज भी वैसी ही सोचनीय है। जिस तरह की कांग्रेस वज़ारत के पहिले थी।

सार्वजनिक लाभ की दृष्टि से कांग्रेस प्रान्तों की जेल और पुलिस विभाग तथा अन्य विभाग में आज भी पहिले की ही तरह धांधली, गैर जिम्मेदारी, घूंसखोरी और जुल्म तथा शोषण की नीति का दौर-दौरा है।

किसान आन्दोलन का पथ भी कठिनाइयों से अलग नहीं, पर यह कठिनाइयां अधिक तेज और दुःखदायी उस समय हो जाती हैं, जब कि हम अपने मार्ग को अपने ही बन्धुओं द्वारा घिरा हुआ पाते हैं। "हलधर" आज ऐसे समय में प्रकाशित हो रहा है, जब कि भारत की किसान जनता में एक नये जीवन का सञ्चार हो रहा है, और जब कि हमारी आबादी का यह अधिकांश भाग एक नवीन जागृति और उत्साह से गठबन्धित हो रहा है।

"हलधर" सेवा की विशुद्ध भावनाओं से प्रेरित हो, तथा जीवन-जागृति एवं चेतनता की दीप शिखा लेकर कार्य-क्षेत्र में पदार्पण कर रहा है। जनता की सेवा करना, उत्पीड़नों एवं अत्याचारों के विरुद्ध विद्रोह करना, समाजवादी सिद्धान्तों का प्रचार करते हुये, आवश्यकता पड़ने पर और न्याय की रक्षा के लिये सदैव निर्विकार एवं निर्भीक भाव से सरकार अथवा किसी संस्था-विशेष का विरोध करना "हलधर" का सदा कर्त्तव्य होगा।

अमर-अभिलाषा

[लेखक—कामरेड, निराकार सर्वे]

हल जाये-धरणी एक बार, नव जीवन का-फिर हो प्रसार।
डग, मग, डोले-यह दिग दिगन्त, उठ जाये-जग से, दुराचार॥
भूखे-नंगे—कङ्काल-आज, कर उठे, प्रलय का-शङ्खनाद।
पूंजीपतियों का-मिटे-नाम, हो-नष्ट, भ्रष्ट,- साम्राज्यवाद॥

× × ×

धधके-लपटें-ज्वालाओं की, धन-सत्ता की, अन्तिम लय हो।
मले हथेली-फुके तिजोरी, महा प्रलय का अभिनय हो॥
स्वार्थ, द्वेष-प्रतिस्पर्धा के, प्रतिफल-में यह परिवर्त्तन हो।
साम्राज्य-हितैषी--लालाओं के, घर में-फिर से, क्रन्दन हो॥

× × ×

सुलगा-वैश्वानल-भू-में, जो—धधकेगा,-जग में-एक वार।
धनिकों का-वैभव हो-विलीन, जल जायेगा, हो–क्षार क्षार॥
पाखण्ड-दम्भ-भग जावेगा, रह जायेगा-बस कनक लाल।
आता है--'हलधर' वेश साज, अभ्यन्तर में, ले-अमर ज्वाल॥

❀ हलधर ❀

लेखक–गिरजाशंकरसिंह 'अभय'!

हलधर उठो करो संग्राम!,
लहे विश्व पूरण आराम।
धर लो उर में धीर महान,
रहे विश्व सब एक समान॥

उर में लाखों शूल चुभे हों,
ठोकर हर दर पर खाते हों।
कर में ले!, ले! शस्त्र न भाग,
रोक! रोक! शोषण की आग॥
संसृति अरु ऐश्वर्य बढ़ाओ,
ग्राम वायु की कीर्ति बढ़ाओ।
मचे सकल जग में कुहराम॥

हलधर उठो! करो संग्राम!॥

श्रमजीवी–

(च) मजदूर-पार्टी, श्रमजीवियों का राजनीतिक संगठन है, जिसका जन्म मजदूर-सङ्घों के आन्दोलन से होता है।

× × ×

(छ) श्रमजीवियों का एकाधिपत्य समस्त वर्गों के लोप होने और एक स्वाधीनता-मूलक और समान अधिकार सम्पन्न समाज की स्थापना होनेके लिये नीचे की सीढ़ी है।

× × ×

(ज) मजदूरों की क्रान्ति में सब से पहिला कदम यह होना चाहिये कि शासन की बागडोर श्रमजीवी दल के हाथ में आजाये, जिससे वे लोक-सत्ता के युद्ध में विजय प्राप्त कर सकें।

× × ×

हे हलधर!

लेखक–गिरजाशंकरसिंह 'अभय'।

हे हलधर, अब जाग उठो,
हे सोने का यह वक्त नहीं।
रोको कैसा अन्धेर मचा,
क्या है कुछ इसका ध्यान नहीं॥
हम भूखों अरु अधनङ्गों की,
जो सुनते आर्त पुकार नहीं।
उन पशुओं को, इस पृथ्वी पर,
रहने का है अधिकार नहीं॥
वे नीच, कुटिल, कपटी, लम्पट,
माया का जाल बिछाते हैं।
छलछद्म, प्रपञ्च, अनेकों रच,
लालच दे खूब लुभाते हैं॥
अपने सुवर्ण की आभा से,
भाई भाई भिड़वाते हैं।
रक्षक बन भक्षण करते हैं,
अरु दास-कर्म करवाते हैं॥

श्री विद्यासागर दीक्षित द्वारा संपादित 'हलधर', इटावा, 15 जुलाई 1939

'Haldhar', a Hindi journal edited by Shri Vidyasagar Dikshit, Ittawa, 15 July 1939.

नसीम बानू

पाक्षिक सिने पत्रिका 'रंगमंच' का मुखपृष्ठ, 1939

Cover page of the film fortnightly 'Rangmanch', 1939.

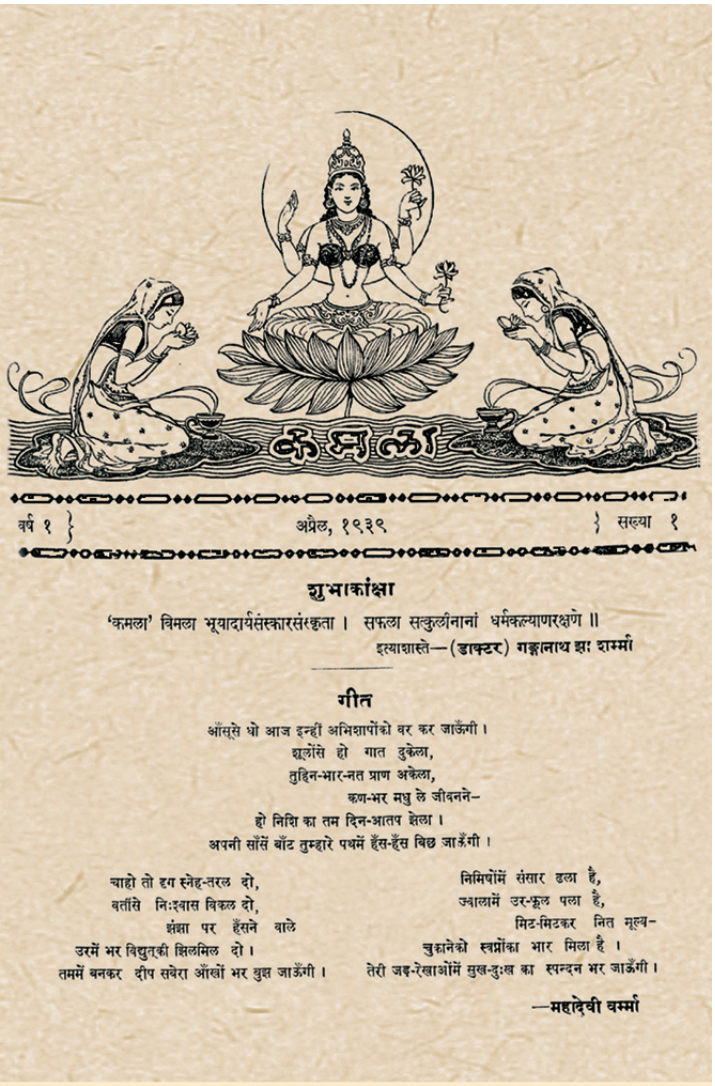

कमला

वर्ष १ } अप्रैल, १९३९ } संख्या १

शुभाकांक्षा

'कमला' विमला भूयादार्यसंस्कारसंस्कृता । सफला सत्कुलीनानां धर्मकल्याणरक्षणे ॥

इत्याशास्ते—(डाक्टर) गङ्गानाथ झः शर्म्मा

गीत

आँसूसे धो आज इन्हीं अभिशापोंको वर कर जाऊँगी ।
शूलोंसे हो गात दुकेला,
तुहिन-भार-नत प्राण अकेला,
कण-भर मधु ले जीवनने–
हो निशि का तम दिन-आतप झेला ।
अपनी साँसें बाँट तुम्हारे पथमें हँस-हँस बिछ जाऊँगी ।

चाहो तो दृग स्नेह-तरल दो,
वर्तीसे निःश्वास विकल दो,
झंझा पर हँसने वाले
उरमें भर विद्युत्‌की झिलमिल दो ।
तममें बनकर दीप सवेरा आँखों भर बुझ जाऊँगी ।

निमिषोंमें संसार ढला है,
ज्वालामें उर-फूल पला है,
मिट-मिटकर नित मूल्य–
चुकानेको स्वप्नोंका भार मिला है ।
तेरी जड़-रेखाओंमें सुख-दुःख का स्पन्दन भर जाऊँगी ।

—महादेवी वर्म्मा

बाबूराव विष्णु पराड़कर द्वारा संपादित पत्रिका 'कमला', अप्रैल 1939

'Kamla', a Hindi journal edited by Baburao Vishnu Pararkar, April 1939.

फ़रवरी, १९३९ : : वर्ष १ : संख्या ८

रूपाभ

मैक्सिम गोर्की

श्री रामचंद्र टंडन

(१)

मैक्सिम गोर्की आधुनिक रूस का सब से बड़ा साहित्यिक तो था ही, इसकी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा भी बढ़ी चढ़ी हुई थी। मृत्यु के समय (१८ जून, १९३६) गोर्की की अवस्था अड़सठ वर्ष की थी। इस जीवन के कम से कम पैंतालीस वर्ष साहित्यिक रचना-कार्य में व्यतीत हुए थे। इन वर्षों में गोर्की ने न केवल संसार के साहित्य को अमूल्य रत्न भेंट किए, वरन् रूसी जनता की मनोवृत्ति बदलने तथा एक नए युग के निर्माण में, भाग लिया।

गोर्की ने नई मानवता के आदर्शों का प्रतिपादन किया। इसकी कल्पना का नया मानव, कठोर बंधनों से मुक्त है, साहसी है, सच्चा है; उसमें सामूहिक चेतना है, दृढ़ व्यक्तित्व भी है; वह निगूढ़ चिंतन तथा विशद ज्ञान वाला मनुष्य है; साथ ही भौतिक जगत में, उसमें महती उत्पादक शक्ति है। गोर्की ने पुराने लोगों में इस नई मानवता के तत्व को पहचाना, उसे विकास देने में, उसके रूप के संगठन में सहायता पहुँचाई। इसने इस नए तत्व से विदग्ध जनता को लड़ने की शक्ति प्राप्त करने में सहयोग दिया, उसे क्रांतिकारी बनाया और समाजवाद के पथ पर अग्रसर किया।

यह स्वयं दलित वर्ग के बीच में उत्पन्न हुआ था। इसने इस बात का अनुभव किया कि भविष्य में विश्वास और भावुक उल्लास, यह चीज़ें इसके वर्ग को इतर वर्ग के विरुद्ध विजय प्राप्त कराने में पर्याप्त न होंगी। इसके लिए संगठन और समाजवाद के सिद्धांतों के ज्ञान की आवश्यकता है। गोर्की समाजवाद का सच्चा कलाकार बना। गोर्की ने एक स्थल पर लिखा है कि, 'हमारे समय में ऐतिहासिक और वैज्ञानिक दोनों ही आधारों पर स्थित सच्ची व्यापक श्रमिक वर्ग की मानवता का उदय हुआ है, ···इस मानवता का उद्देश्य है सभी जातियों और राष्ट्रों के श्रमिक वर्ग को पूँजीवाद के लौह चंगुल से मुक्त कराना।' गोर्की इस नवीन मानवता का हार्दिक समर्थक था, और वह चाहता था कि उसका गायक बने।

जिस समय कि गोर्की ने साहित्यिक क्षेत्र में पदार्पण किया उस समय प्रमुख रूसी साहित्यिकों में एक प्रकार का निराशावाद फैला हुआ था। यह समय पिछली शताब्दी के अंतिम दस वर्षों का समझना चाहिए। रूस पर ज़ारशाही का आतंक पूर्ण रूप से छाया हुआ था। उससे पूर्व बीस वर्षों के भीतर ज़ारशाही के विरुद्ध जो विद्रोह हुए थे वह असफल रहे थे।

अनामिका के कवि
श्री सूर्यकांत त्रिपाठी के प्रति

श्री सुमित्रानंदन पंत

छंद बंध ध्रुव तोड़, फोड़कर पर्वत कारा
अचल रूढ़ियों की, कवि, तेरी कविता धारा
मुक्त, अबाध, अमंद, रजत निर्झर सी निःसृत,—
गलित, ललित आलोक राशि, चिर अकलुष अविजित!
स्फटिक शिलाओं से तूने वाणी का मंदिर
शिल्पि, बनाया,— ज्योति-कलश निज यश का धर चिर।
शिलीभूत सौंदर्य, ज्ञान, आनंद अनश्वर
शब्द शब्द में तेरे उज्वल जड़ित हिम शिखर।
शुभ्र कल्पना की उड़ान, भव-भास्वर कलरव,
हंस, अंश वाणी के, तेरी प्रतिभा नित नव;
जीवन के कर्दम से अमलिन मानस सरसिज
शोभित तेरा, वरद शारदा का आसन निज।
अमृत पुत्र कवि, यशःकाय तव जरामरणजित,
स्वयं भारती से तेरी हृत्तंत्री झंकृत।

दो कविताएं

श्री रामविलास शर्मा

विश्रांति

शिशिर की साँझ यह
छाई हरे खेतों पर ठंढी शांति लिए, धूलभरे गलियारों पर,
लौट गए थके माँदे घर को सभी किसान।
नगर की गलियों में
छाया हुआ काला धुआँ, रुंधा हुआ ओस से।
लहू की बूँदों से,
जलते हैं बल्ब सूनी सड़कों पर लाल लाल।
शिशिर की रात यह निश्चिंत;
सोते हैं जन मानों दीर्घ कल्परात्रि में!
कुहरे से मुँदे हुए
ईश के सुवर्ण सिंहासन के पार्श्व से,
उड़ चले पुष्पक विमान पृथिवी की ओर!

मासिक पत्रिका 'रूपाभ' में प्रकाशित लेख व कविताएँ, फरवरी 1939

Poems and writings extracted from the monthly magazine 'Rupaabh', February 1939.

रामेश्वर करूण द्वारा संपादित सचित्र पत्रिका 'शिक्षा', लाहौर, जून 1941

'Shiksha', an illustrated Hindi journal edited by Rameshvar Karun, June 1941.

माननीय श्रीप्यारेलाल तालिब कुरील, भूतपूर्व एम० एल० ए० (केन्द्रीय) की संरक्षता में

The UNTOUCHABLE
अछूत

वार्षिक मूल्य ६)

एक प्रति =)

वर्ष १, अंक १] लखनऊ, शुक्रवार, २२ अगस्त १९४७ ई० [सं०, निरंजनलाल कुरील बी० एस० सी०, एल० टी०

डा० अम्बेदकर मंत्री मण्डल के सदस्य चुने गये

Lib 63/848/a

डा० बी० आर० अम्बेदकर

नई दिल्ली, ८ अगस्त—विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि भारतीय डोमीनियन के सम्मानित प्रधान मंत्री पं० नेहरू ने अपने मंत्रिमण्डल के सदस्यों को चुन लिया है और उनमें पदों का वितरण निम्नलिखित रूप से किया है—

(१) पं० नेहरू-सभा के नेता, प्रधान मंत्री तथा वैदेशिक और सम्बन्ध विभाग के मंत्री।
(२) सरदार वल्लभ भाई पटेल—उपनेता, गृहमंत्री, सूचना, ब्राडकास्टिंग तथा स्टेट्स।
(३) डा० राजेन्द्र प्रसाद—भोजन और कृषि।
(४) सरदार बलदेव सिंह—रक्षा।
(५) सर षणमुखम् चेट्टी—अर्थ।
(६) डा० श्यामा प्रसाद मुकर्जी—उद्योग तथा रसद।
(७) डा० जान मथाई—यातायात और रेलवे।
(८) डा० बी० आर० अम्बेदकर—कानून।
(९) श्री सी० [illegible] व्यापार।
(१०) [illegible] रफ़ी अहमद किदवई—डाक।
(११) श्री जगजीवन राम—श्रम।
(१२) राजकुमारी अमृत कौर—स्वास्थ्य।
(१३) मौलाना अबुल कलाम आज़ाद—शिक्षा।
(१४) श्री एन० वी० गाडगील—वर्कस, खदान और बिजली।

श्री योगेन्द्रनाथ मण्डल पाकिस्तान विधान परिषद् के अस्थायी सभापति

कराची १० अगस्त—पाकिस्तान विधान परिषद् का प्रारम्भिक अधिवेशन आज सवेरे १० बजे प्रारम्भ हुआ। मि० लियाक़तअलीख़ाँ ने यह प्रस्ताव किया कि श्री योगेन्द्रनाथ मण्डल को अस्थायी सभापति चुना जाय। ख्वाजा नज़ीमुद्दीन ने प्रस्ताव का समर्थन किया। इसके बाद सभा के सभी क्षेत्रों की ओर से हुई करतलध्वनि के बीच श्रीयोगेन्द्रनाथ मण्डल ने सभापति पद का आसन ग्रहण किया।

पाकिस्तान की विधान परिषद् की मुस्लिम लीग पार्टी ने मि० एम० ए० जिन्ना को विधान परिषद् का सभापति चुनने का निश्चय किया और श्रीयोगेन्द्रनाथ मंडल को अस्थाई सभापति।

यह भी निश्चय किया कि पाकिस्तान के मनोनीत गवर्नर जनरल मुहम्मद अली जिन्ना को सभी सरकारी कानून-पत्रों और पत्रव्यवहारों में १५ अगस्त से कायदे आज़म मुहम्मद अली जिन्ना लिखा जाय।

मिस्टर जिन्ना को सभापति चुनने, पाकिस्तान के झण्डे को स्वीकार करने के अतिरिक्त पाकिस्तान में रहनेवाले अल्पसंख्यकों के मूलभूत अधिकारों के सम्बन्ध में सिफारिश देने के लिये सभापति तथा ७ सदस्यों की एक समिति नियुक्ति की। इसके अतिरिक्त भी कुछ समिति नियुक्त की जायगी।

पाकिस्तान विधान परिषद् की बैठक १२ अगस्त तक होगी।

निरंजनलाल कुरील द्वारा सम्पादित पत्रिका 'अछूत' का आवरण पृष्ठ, लखनऊ 22 अगस्त 1947

Cover page of 'Achhyut', a Hindi journal edited by Niranjanlal Kuril, Lucknow, 22 August 1947.

भाग १ – अङ्क १ १५ नवम्बर १९४७

आकाशवाणी

(रेडियो सम्बन्धी स्वतन्त्र पाक्षिक पत्रिका)

सम्पादक :—

जगदम्बाप्रसाद मिश्र 'हितैषी' गोपाललाल खन्ना, एम० ए०

श्री सूर्य्यकान्त त्रिपाठी 'निराला,'

(आपने हाल में दिल्ली और लखनऊ के रेडियो सम्मेलन में कविता पाठ किया था ।)

LIB 190/84 P.6 D

जगदम्बा प्रसाद मिश्र 'हितैषी' व गोपाल लाल खन्ना द्वारा सम्पादित रेडियो संबंधी पाक्षिक पत्रिका 'आकाशवाणी' का आवरण पृष्ठ, 15 नवम्बर 1947

Cover page of 'Aakashvaani', a Hindi fortnightly on radio, jointly edited by Jagdamba Prasad Mishra 'Hitaishi' and Gopal Lal Khanna, 15 November 1947.

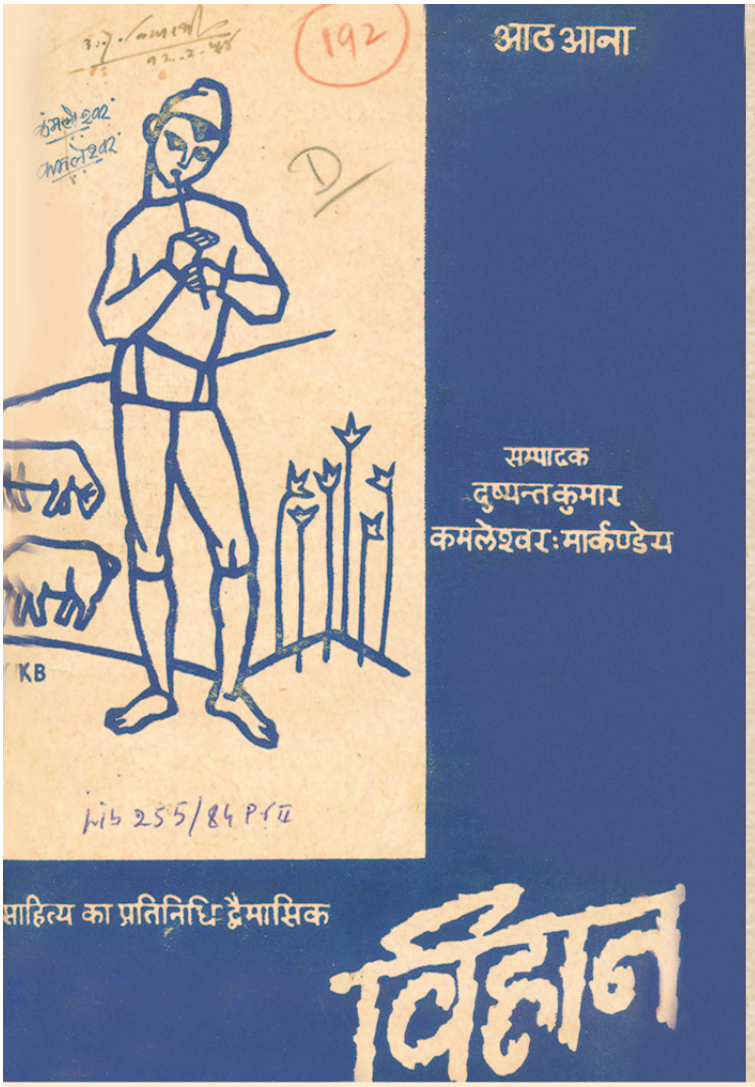

विहान

मार्च-अप्रैल : अंक—१

१९५३

प्रबन्ध-सम्पादक

विश्वनाथ प्रसाद जायसवाल

प्रबन्ध-समिति

१. उमेश चन्द्र उपाध्याय
२. हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव
३. दुष्यंत कुमार त्यागी
४. जितेन्द्र जायसवाल
५. राधेमोहन सिन्हा

रूप सज्जाकार
कमलेश्वर

आवरण पृष्ठ का चित्र
भोर हुई बज उठी बाँसुरी
चित्रकार के० बी०

अनुक्रम

टिप्पणियां :
१. विहान का प्रकाशन
२. हमारे संकल्प
३. नई कविता
४. नए लेखक और रेडियो
५. निराला-जयंती
६. 'नए पत्ते'

सम्पादकीय :
साहित्य की मूल चेतना

लेख : निबन्ध :
१. कलाकार के बंधन — प्रकाश चन्द्र गुप्त
२. आस्ट्रेलिया का साहित्य बीसवीं सदी — भगवत शरण उपाध्याय
३. उर्दू शायरी का नया रूप — रघुपति सहाय 'फ़िराक'
४. चश्मे तर अश्क बार हैं प्यारे ! — श्री कृष्ण दास
५. मेरी अप्रकाशित कृति — नेमिचन्द्र जैन
६. टिकोरा — विद्यानिवास मिश्र

कहानी : स्कैच :
१. नीम की टहनी — मार्कण्डेय
२. इन्सान और हैवान — कमलेश्वर
३. शाम की थकन — अमृतराय
४. दो लघुकथाएं — परमानन्द गौड़

कविताएं :
१. तीन कविताएं — केदार
२. हितोपदेश, कोट्टी — नागार्जुन
३. एक अनुभव — सतीश दत्त पांडे
४. हल के बोल — गंगाप्रसाद श्रीवास्तव
५. विन्टर थाट्स — अजित कुमार
६. आज तो— — दुष्यंत कुमार
७. चेतु रे— — युक्तिभद्र दीक्षित

विहान कार्यालय
११, कानपुर रोड
इलाहाबाद ।

दुष्यन्त कुमार, कमलेश्वर व मार्कण्डेय द्वारा सम्पादित साहित्य की द्विमासिक पत्रिका 'विहान', इलाहाबाद, मार्च-अप्रैल, 1953

'Vihaan', a Hindi bi-monthly jointly edited by Dushyant Kumar, Kamleshwar and Markendaya, March-April 1953, Allahabad.

वर्ष १ ; खंड १ । कार्तिक, २९९ तुलसी-संवत् [संख्या ४; पूर्ण संख्या ४

माधुरी

संपादक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
श्रीरूपनारायण पांडेय

वार्षिक मूल्य ६॥) प्रति संख्या ॥)

नवलकिशोर-प्रेस, लखनऊ में छपकर प्रकाशित

श्री दुलारेलाल भार्गव एवं श्री रूपनारायण पांडेय द्वारा सम्पादित पत्रिका 'माधुरी', कार्तिक, 299 तुलसी संवत्

A rare copy of 'Madhuri', a Hindi journal jointly edited by Shri Dulare Lal Bhargava and Shri Roopnarayan Pandeya, Kartik 299 Tulsi Samvat.